नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

सत्यमेव जयते

राजभाषा रत्नसिंधु

जल की रक्षा करें

- हिंदी अर्ध वार्षिक पत्रिका
- अंक : 8

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

वाह ! बच्चो !

कु. श्रृती श्रीकृष्ण सामंत
एच.एस.सी.72.62%
पुत्री श्री. श्रीकृष्ण सामंत
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. अनुजा अनंत गोडे
एस.एस.सी.(C.B.S.E.) 90.06%
पुत्री श्री. अनंत गोडे
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

मंथन नरसिंहा कशाळीकर
एस.एस.सी. 94.80%
पुत्र श्री. नरसिंहा कशाळीकर
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. गौरी सुरेश भडवळकर
एस.एस.सी. 93.40%
पुत्री श्री. सुरेश भडवळकर
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. नेहा हेमंत जाधव
एस.एस.सी. 91.80%
पुत्री श्री. हेमंत जाधव
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

यशवंत वासन टी. सामंत
एस.एस.सी. 91.60%
पुत्र श्री. वासन टी सामंत
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. सलोनी प्रशांत कापडी
एस.एस.सी. 90.20%
पुत्री श्री. प्रशांत कापडी
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

आर्यन राहुल रिसबूड
एस.एस.सी. 89.20%
पुत्र श्री. राहुल रिसबूड
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. उन्नति प्रदिप कांबळे
एस.एस.सी. 81.40%
पुत्री श्री. प्रदिप कांबळे
सीमा शुल्क मंडल, रत्नागिरी

कु. आंचल आनंद परब
एस.एस.सी. 80.80%
पुत्री श्री. आनंद परब
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

अंश अमरजित सुर्वे
एस.एस.सी.(इं.माध्य.) 78.20%
पुत्र श्री. अमरजित सुर्वे
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. वृषाली सुरेन्द्र जाधव
एस.एस.सी. 75.80%
पुत्री श्री. सुरेन्द्र जाधव
सीमा शुल्क मंडल, रत्नागिरी

कु. दिक्षिता विनोद बेंन्द्रे
एस.एस.सी. 75.80%
पुत्री श्री. विनोद बेंन्द्रे
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

कु. काजल प्रकाश चव्हाण
एस.एस.सी. 69.60%
पुत्री श्री. प्रकाश चव्हाण
विजया बैंक, रत्नागिरी

अध्यक्षीय संबोधन...

साथियों

सर्व प्रथम आप सभी को मेरा सस्नेह नमस्कार.

मैंने 1अगस्त 2016 से बैंक ऑफ इंडिया रत्नागिरी अंचल के आंचलिक प्रबंधक का कार्यभार संभाला है और मुझे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने का मौका मिल रहा है. यह मेरा सौभाग्य है कि, इस समिति के माध्यम से मैं आपसे जुड रहा हूं. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है तथा जल्द ही छमाही बैठक में रूबरू होने का मौका मिलेगा.

साथियों हमारी समिति तेजी से प्रगति के पथपर चल रही है. बैठकों का समय पर आयोजन, हिंदी पखवाडे का आयोजन, कोर कमेटी के सदस्य कार्यालयों का दौरा, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, राजभाषा प्रतिनिधियों का नामांकन, यूनिकोड प्रशिक्षण तथा जिस कार्यालय में हिंदी का कार्यान्वयन अच्छा है उस कार्यालय को ''**नगर राजभाषा शील्ड**'' प्रदान करके गौरान्वित किया जा रहा है, इतना ही नहीं, समिति अपनी वेबसाइट बनाने के प्रयास में है, जल्द ही यह कार्य पूरा हो जायेगा. इस कार्य में आप सभी का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है.

हमारा देश विविध भाषा-भाषियों से समृद्ध बना है, हर प्रदेश की भाषा अलग है, हर प्रदेश की पहचान अलग है. इन विविधताओं को एक सूत्र में पिरोनेवाली भाषा हिंदी ही है, जिसे हम अपनी भाषा के रूप में जानते हैं. भिन्न भाषी स्वयं की बात सामनेवाले से हिंदी भाषा में रखकर अपने कार्य में सफलता पा सकता हैं. इसी तरह अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को अपनानेवाली संपर्क भाषा हिंदी भाषा सरल एवं समृद्ध होने से इसे बढावा मिलता है.

राजभाषा रत्नसिंधु समिति द्वारा प्रकाशित की जानेवाली पिछली छमाही पत्रिकाओं का अवलोकन करते समय मैंने यह पाया कि, समिति ने पत्रिका में विविधता लाने का प्रयास किया है, पत्रिका के अंतरंग हेतु सदस्य कार्यालयों के सदस्यों को योगदान बहुत महत्व पूर्ण है. मैं आशा करता हूं कि हमारे सदस्य कार्यालयों के प्रतिभावान स्टाफ इस खुले मंच का लाभ लेंगे.

क्षेत्रीय भाषाएं हमारा कारोबारी आधार बढाने में महत्वपूर्णता रखती हैं.जनता की भाषा में कारोबार करना यानि एक प्रगति का पहला और महत्वपूर्ण कदम होगा.हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषा को अपनाएं और अपनों को पाएं. यही सोच से समिति ने मराठी भाषा को एक अलग मंच उपलब्ध कराया है.आप मराठी में काव्य तथा आलेख प्रस्तुत कर सकते हैं. समिति के सकल विकास की कामना करते हुए,

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं.

आपका,

प्रदीप कांबले

अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया.

संपादकीय....

साथियों,

आप सभी को सविनय नमस्कार,

राजभाषा रत्नसिंधु का आठवां अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे हर्ष हो रहा है. रत्नसिंधु के सातवें अंक पर हमें पाठकों से बहुत अच्छी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं, आपके सुझावों ने पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए हमें उत्साहित किया गया. इसके लिए आप सभी को धन्यवाद.

हिंदी के प्रचारप्रसार हेतु समिति विविध नये-नये प्रयोग अपना रही है. हिंदी पखवाड़ा मनाया गया. सभी सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी पखवाडे के बैनर बनाकर भेजे गये ताकि सभी कार्यालयों प्रदर्शनी में एकरूपता हो. हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर गृह मंत्री, गर्वनर आदि के संदेश के साथ-साथ अध्यक्ष महोदय का हिंदी दिवस संदेश भेजा गया था. सदस्य कार्यालय आकाशवाणी ने समिति की प्रगति पर अध्यक्ष महोदय जी के साथ परिचर्चा की जिसे आकाशवाणी द्वारा प्रसारित भी किया गया.

हमारे सभी सदस्य कार्यालय जिनमें उपक्रम, निकाय-केंद्र सरकार के कार्यालय, बैंक तथा बीमा कंपनियां शामिल हैं, यह सभी मिलकर समिति को प्रगति पथ पर ले जा रहे हैं. इस अंक में आलेख,कविताएं, कोंकण के विशेष त्यौहार, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि पर पठनीय तथा संग्रहनीय साहित्य प्रस्तुत किया गया है.

समिति के विविध आयामों में कोर कमेटी द्वारा सदस्य कार्यालयों का दौरा किया गया और वहां हिंदी के कार्यान्वयन में आनेवाली कठिणाईयां तथा यूनिकोड के प्रयोग से हिंदी कार्यान्वयन में बढ़ोत्तरी तथा हिंदी में ईमेल भेजना, यूनिकोड अपलोड करना, कार्यालयीन आंतरिक कामकाज पर डेस्क प्रशिक्षण प्रदान करने का मौका मिला. इन सभी कार्यों में सदस्य कार्यालय का सहयोग महत्वपूर्ण रहा.

इस दीपोत्सव के इस मंगल पर्व पर आप तथा आपके परिवार जनों को हार्दिक शुभकामनाएं.

धन्यवाद.

आपका,

(रमेश गायकवाड़)

राजभाषा
रत्नसिंधु

अध्यक्ष
प्रदीप कांबले
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादन सहयोग
जनार्दन शिंदे
कोंकण रेलवे

कोर कमेटी सदस्य

पुरुषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी

लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क

सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

संपर्क कार्यालय
सदस्य सचिव
नक्षर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक - 415 639
ई-मेल - ratnasindhu10@gmail.com
वेबसाइट-http://narakasratnagiri.co.in

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के है। अत: यह आवश्यक नहीं कि इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

अंतरंग

आपकी राय	2
भवानीप्रसाद मिश्र – शताब्दिचरण भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में बिम्ब	4
राष्ट्रीय सुरक्षा	5
प्रभावी बैंकिंग के लिए कर्मचारियों की भूमिका	9
रूठी बारिश	13
ग्रीन बिल्डिंग (हरित भवन)–भविष्य की जरूरत	14
भारत की कन्याएं	15
भारत में बाल–श्रमिक समस्या	18
एन.पी.ए.प्रबंधन आज की जरूरत	20
कोंकण के उत्सव	21
काव्य	23 से 28

आपकी राय....

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, आगरा

महोदय,

पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता एवं अन्य सामग्री पठनीय है । विशेष तौर पर कुछ आलेख जैसे ''आपदा प्रबन्धन की तैयारी'' कबीर : एक समाज सुधारक तथा 'पुस्तक की आत्मकथा' अत्यन्त रोचक एवं सराहनीय है । विभिन्न फोटोग्राफ्स को दर्शाती हुई पत्रिका का मुख पृष्ठ 'सादगी के साथ' आकर्षक है एवं रिश्तों की जगा पूंजी का भी परिचायक ।

सफल पत्रिका प्रकाशन हेतु बधाई

हस्ताक्षर
(डॉ. आर. एस. तिवारी)
सह-सचिव, नराकास, आगरा

भारतीय तटरक्षक अवस्थान रत्नागिरी, विमानतल भवन, रत्नागिरी

महोदय,

आपके द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका, राजभाषा रत्नसिंधु का 8 वां अंक हमें प्राप्त हो चुका है । इस पत्रिका में सम्मिलित आलेख तथा काव्य को पढ़कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई

धन्यवाद ! भवदीय,
(सुरेश चन्दर)
सहायक समादेशक, कार्यकारी अधिकारी,
तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी.

भारतीय तटरक्षक अवस्थान रत्नागिरी, विमानतल भवन, रत्नागिरी

महोदय,

आपके द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका, राजभाषा रत्नसिंधु का 8 वां अंक हमें प्राप्त हो चुका है । इस पत्रिका में सम्मिलित आलेख तथा काव्य को पढ़कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई

धन्यवाद ! भवदीय,
(सुरेश चन्दर)
सहायक समादेशक, कार्यकारी अधिकारी,
तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), बेंगलूरु

महोदय,

हिंदी पत्रिका रत्नसिंधु 7 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । इसमें प्रकाशित लेख एवं कविताएं बेहद रोचक लगीं । सुंदर आवरण एवं प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हस्ता.(डॉ. प्र. श्री. मूर्ति)
सदस्य-सचिव, नराकास (का) एवं
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, सीएसआईआर-एनएएल

आयकर अपीलीय अधिकरण, पुणे न्यायपीठ,
महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण, 2 माला,
सेंट मेरी स्कूल के पास, स्टेवर्ली रोड, कैंप, पुणे – 411 001.

महोदय,

हमें यह सूचित करने में हार्दिक प्रसन्नता हो रही है की, आपके नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रकाशित गृहपत्रिका 'रत्नसिंधु' प्राप्त हुई है । हम आशा करते है की यह पत्रिका हमारे कार्यालय के सभी कर्मचारियों को पसंद आएगी, साथ ही में आपके अनुरोध के अनुसार हम अपने सुझाव जरूर भेजेंगे ।

हस्ता.(सुषमा चावला)
(अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे
एवं वरिष्ठ सदस्य आयकर अपीलीय अधिकरण,
पुणे न्यायपीठ, पुणे)

आयकर विभाग, कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त,
हिमाचल प्रदेश क्षेत्र, रेलवे भवन, शिमला – 171 003.

महोदय,

पत्रिका की प्रति भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद । पत्रिका का मुख-पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है और इसमें प्रकाशित जानकारी ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है ।

भवदीय,
(डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा)
सहायक निदेशक (रा.भा.) मुख्य आयकर आयुक्त, शिमला ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक)
मैसूरु – 570 009.

महोदय/महोदया,

रत्नागिरि की पत्रिका ''रत्नसिंधु'' का 8 वां अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएं एवं अन्य सामग्री उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद लगी । पत्रिका राजभाषा हिंदी से संबंधित बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है । पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों से नराकास की राजभाषा गतिविधियों की झलक प्राप्त होती है । पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका के आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हमें पत्रिका भेजने के लिए आपका बहुत बहुत आभार ।

हस्ता./-(प्रजीष कुमार)
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) मैसूर एवं
सचिव, नराकास, भिलाई दुर्ग

महानिदेशालय असम राइफल्स एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
लाइटकोर, शिलांग – 793 010.

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'राजभाषा रत्नसिंधु' अर्ध वार्षिक पत्रिका के 8 वे अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद । पत्रिका का आवरण मनमोहक होने के साथ–साथ इसकी सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । तथापि डॉ. रवि दिवाकर गिरहे की 'आपदा प्रबंधन की तैयारी', श्री प्रिया पोकले की 'छोटी–छोटी बातों से बनता जीवन' एवं श्री सागर अशोक घोटगे की 'मैं बोझ नहीं हूँ' रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं । उम्मीद है कि यह पत्रिका अपने रोचक विषयों से आगे भी पाठकों का निरंतर ज्ञानवर्धन करती रहेगी ।

मैं पत्रिका संपादक मंडल को सफल संपादन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ ।

हस्ता/– (सुजाता चौधरी)
मेजर जीएसओ–१ (शिक्षा) एवं सचिव,
नराकास कृते अध्यक्ष, नराकास, शिलांग

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' के अंक–7 की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । पत्रिका का प्रस्तुत अंक, उसके कलेवर, मुद्रण, साज–सज्जा, छायाचित्र तथा श्रेष्ठ रचनाओं के समावेश के कारण अत्यंत ही आकर्षक एवं रोचक बन पड़ा है ।

पत्रिका में सम्मिलित किया गया श्री जनार्दन शिंदे का लेख 'हिंदी और कार्यालयीन प्रशासनिक हिंदी', श्री रवि दिवाकर गिरहे का लेख 'आपदा प्रबंधन की तैयारी', सुश्री प्रिया पोकले का लेख 'छोटी–छोटी बातों से बनता जीवन', श्री रमेश मुसळे की रचना 'मेहनत का फल', एवं दिपिन जी. गवई की रचना 'सजा' बहुत ही प्रशंसनीय है ।

हस्ताक्षर
(डॉ. प्र. श्री. मूर्ति)
सदस्य–सचिव, नराकास (का) एवं
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, सीएलआईआर–एनएएल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,भिलाई – दुर्ग (छत्तीसगढ)

महोदय,

आपके गुणात्मक एवं सर्जनात्मक सत्प्रयास से ''राजभाषा रत्नसिंधु'' पत्रिका के नूतन अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसमें प्रकाशित आलेख व पत्रिका की साज–सज्जा नितांत ज्ञानवर्धक,मनोहारी, सराहनीय एवं अनुकरणीय है ।

आशा है, आपके नेतृत्व में पत्रिका नित–नूतनता के साथ साहित्यिक ऊँचाई को प्राप्त करेगी ।

शुभकामनाओं सहित । सादर,

हस्ता/–
(डॉ. बी. एम. तिवारी)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं
सचिव, नराकास, भिलाई–दुर्ग ।

जामनगर

महोदय,

आप द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका राजभाषा 'रत्नसिंधु' का 7 वा अंक प्राप्त कर इस कार्यालय को अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का हर भाग गहराई से अध्ययन करने से ज्ञात होता है की आप द्वारा पत्रिका को छापने में तन, मन और धन से प्रयास किया गया है। हमें आशा है की हमारे सभी सदस्य गण भी इसी प्रकार पत्रिका छापने का कार्य प्रारम्भ कर देंगे, जिससे की पत्रिका के माध्यम से हम न केवल एक दूसरे को जानने समझने का शुभ अवसर प्राप्त कर पाएंगे बल्कि राजभाषा हिन्दी को लागू करने का स्वप्न साकार करने में हमें पूर्णतः सफलता प्राप्त होगी।

जतिन शुक्ल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
बीएसएनएल, कार्या. म.प्र.दू.जी., जामनगर

भारत डायनामिक्स लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद – 500 058

महोदय,

रत्नागिरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) की गृह–पत्रिका 'रत्नसिंधु' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ. कार्यालयीन हिंदी, आपदा प्रबंधन तथा ठेका श्रम अधिनियम जैसे लेख पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक हैं. कबीर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता और हिंदी पखवाड़ा पर केंद्रित साहित्यिक लेख सराहनीय हैं, साहित्यिक एवं साहित्येतर सामग्री को संतुलित रखते हुए स्तरीय पत्रिका प्रकाशित करने के लिए संपादक मंडल का पात्र है.

अगले अंक की प्रतीक्षा में,

(होमनिधी शर्मा)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव, नराकास, भिलाई–दुर्ग ।

भवानीप्रसाद मिश्र– शताब्दिचरण
भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में बिम्ब

– प्रा. डॉ. चित्रा गोस्वामी
रत्नागिरी

भवानीप्रसाद मिश्र 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि माने जाते है । इनमें अनुभूतियों की बेलाग अभिव्यक्ति है, जो सहज, स्पष्ट और समकालीन संदर्भ से जुड़ी हुई है । इनके विचार गंभीर तथा स्वस्थ मनःस्थिती के परिणाम हैं । इनकी कविताओं में प्रकृति, प्रणय, ग्राम्य जीवन, मध्यमवर्गीय जीवन की पीड़ा और राजनीति को स्पर्श किया गया है । इनकी भाषा सहज और सरल होकर व्यंग्य बड़े तीक्ष्ण और सशक्त हैं । नवीन प्रयोगों की दृष्टि से भी प्रयोगवादी कवियों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

मिश्रजी प्रकृति के अनन्य उपासक होकर भी कठोर और भयावह रूप की निर्मिती की है । बिम्ब की अभिव्यक्ति मानवीकरण अलंकार के माध्यम से हुई है । जिस प्रकार प्रकृति का नारीरूप कोमल है, उसी प्रकार कठोरता, भयंकरता को ध्वन्यात्मक शब्दों से बिम्बित किया है । उदा.

"सात सात पहाड़वाले,
बड़े-छोटे झाड़वाले,
शेरवाले, बाघवाले,
गरज और दहाड़वाले,
कंप से कनकने जंगल
नींद में डुबे हुए – से
ऊँघते अनमने जंगल ।"

बिम्बद्वारा प्रकृति का भयंकर रूप साकार होना भी सशक्त कहा जा सकता है । कवि का उद्देश्य मात्र प्रकृति चित्रण न होकर व्यक्तिगत अनुभूति को अभिव्यक्ति देना है । वृक्ष से टपकनेवाला फल नेत्रकारों से झरनेवाले अश्रू कण–सा आभासित हो रहा है ।

"फल आँसू की तरह
टपक फल ने हलका...
कर दिया है पेड़ को ।"

यहाँ फल के लिए शरीर से संबंधित अश्रू का वस्तुपरक बिम्ब प्रस्तुत है । जिस प्रकार अश्रू के गिरने से व्यक्ति के हृदय पर रखा हुआ दुःख का बोझ उतर जाता है और हृदय हल्केपन का अनुभव करने लगता है, उसी प्रकार फल ने गिरकर वृक्ष के बोझ को कम कर दिया है ।

मिश्रजी ने कृषकों के प्रति सहानुभूति दिखाई है । ग्रामों में व्याप्त निरक्षरता, मलिनता और दरिद्रता के अतिरिक्त ग्राम्य–सौंदर्य पर दृष्टि डाली है । उदा.

"फुर–फुर उड़ी फुहार अलक हल मोती छाये री
खड़ी खेत के बीच किसानिन कजरी गाये री
झर–झर झरना झरे, आज मन प्राण सिहाये री
कौन जन्म के पूण्य की ऐसे शुभ दिन आये री ।"

सावन मास में वर्षा की रिमझिम फुहारें के रूप में जैसे मोती ही बरस रहे हैं । इससे प्रसन्न होकर खेत में खड़ी कृषक वधू कजरी गीत गा रही है । लोक तत्त्वों के संस्पर्श से बिम्ब में रसात्मकता आ गयी है ।

निष्कर्षतः कह सकते हैं इनके काव्य में मुख्यतः दृष्य, संश्लिष्ट और ध्वनि बिम्बों के दर्शन होते हैं । अल्पसंख्या में द्रवाद बिम्ब मिलते हैं । नवीन प्रयोग की दृष्टि से इनका काव्य महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है । कोमल और कठोर दोनों ही पक्षों को बिम्बित करने में कवि ने समान रूचि दिखाई है । जहाँ ग्राम सौंदर्य और ग्रामीण युवतियों के सौंदर्य से संबंधित बिम्बा विशेष आकर्षण से भरपूर हैं, वहाँ ग्रामवासियों की दयनीय दशा को बिम्बात्मकता दे सकने में कवि को सफलता मिली है । बिम्बों के संदर्भ में मिश्रजी कुशल कवि सिद्ध होते हैं ।

◆

राष्ट्रीय सुरक्षा

तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी.

राष्ट्रीय सुरक्षा एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल आजकल आम तौर पर किया जाता है । प्राय: यह शत्रू देश के आक्रमण से सुरक्षा से संबंधित होता है अथवा उन हथियारबंद आतंकवादियों से सुरक्षा से, जो राष्ट्र के प्रभुत्व को चुनौती देते हैं या राष्ट्रीय एकता-अखंडता को नुकसान पहुंचाते है, लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिप्राय केवल इसी से नहीं है, बल्कि इसे और अधिक बृहद अर्थों में समझने की आवश्यकता है । राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन तीन शब्दों से बना है, इस पर चर्चा करने से पूर्व इन तीनों शब्दों का अर्थ समझना अच्छा होगा । इसमें प्रथम शब्द है राष्ट्रीय, जिसका मतलब है जो राष्ट्र से संबंधित हो, भारत के संदर्भ में प्राय: इसे राष्ट्र-राज्य के बजाय राज्य-राष्ट्र कहा गया है । यह भारतीय समाज की अनेकता की ओर संकेत करता है और इस तथ्य की ओर भी संकेत करता है कि भारत के राज्य यूरोप के राज्यों की तरह के राष्ट्र नहीं रहे हैं, बल्कि उनसे भिन्न रहे हैं । बहु-सांस्कृतिक और बहु-राष्ट्र राज्य होने के बाद भी भारतीय समाज के कुछ हिस्से भारत राष्ट्र के अंतर्गत आते हैं ।

सुरक्षा से अभिप्राय केवल सीमा की सुरक्षा अथवा राष्ट्रीय एकता और स्वायत्तता की सुरक्षा से नहीं है । इसका अर्थ काफी व्यापक है, सुरक्षा का मतलब है राष्ट्रीय जीवन से संबंधित सभी प्रकार की सुरक्षा । राष्ट्र को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय सभी प्रकार से सुरक्षित होना चाहिए ।

हिंदू सांस्कृतिक एकता का विचार, जो भारतीय एकता को धर्म, संस्कृति एवं क्षेत्र के रूप में परिभाषित करता है, उस सूत्र को कमजोर करता है जो विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और नस्लों वाले भारत को एकता प्रदान करता है । यह विचारधारा समाज के एक बड़े भाग को राष्ट्रीय एकता से विमुख करती है । ब्रिटीश भारत का विभाजन द्विराष्ट्र सिध्दांत के आधार पर हुआ, लेकिन वह सिध्दांत अंग्रेज सरकार की नीतियों का ही परिणाम था । विभिन्न संस्कृतियों और प्रजातियों के बीच विरोध और असंतोष होता है, लेकिन जब वे अपने को एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करती हैं और अलगाववादी आंदोलन चलाती हैं तो राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है । इसे भी राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन का हिस्सा मानना है, दूसरा महत्वपूर्ण शब्द है सुरक्षा । सुरक्षा से अभिप्राय केवल सीमा की सुरक्षा अथवा राष्ट्रीय एकता स्वायत्तता की सुरक्षा से नही है । इसका अर्थ काफी व्यापक है, सुरक्षा का मतलब है राष्ट्रीय जीवन से संबंधित सभी प्रकार की सुरक्षा । राष्ट्र को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय सभी प्रकार से सुरक्षित होना चाहिए ।

तीसरा और अंतिम शब्द है प्रबंधन । कोई संगठन अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपने संसाधनों का समुचित उपयोग करता है, इसका संबंध उस संगठन के प्रशासन और परिचालन से होता है, संसाधनों के उपयोग की इस प्रक्रिया को ही प्रबंधन कहते हैं । अब अगर इन तीनों शब्दों को एक साथ रखें तो राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन का मतलब है राष्ट्रीय संसाधनों का समुचित उपयोग करके राष्ट्र को सभी संदर्भों में प्रभावी सुरक्षा प्रदान करना । इस समय भारत एक साथ कई मोर्चों पर सुरक्षा संबंधी खतरों का सामना कर रहा है । इसे डर न केवल बाह्य शत्रुओं से है, बल्कि आंतरिक शत्रुओं से भी है । कश्मीर में छद्म युद्ध, सीमा पर आक्रमण तथा कारगिल युद्ध, आतंकवाद, परमाणु आक्रमण का खतरा, सीमा पार से आ रहे घुसपैठियों का दबाव, मादक पदार्थों की तस्करी, धार्मिक कट्टरपंथ, वैश्विक बाजार में आई अस्थिरता से उत्पन्न आर्थिक असुरक्षा, पर्यावरण संबंधी खतरा, मीडिया द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक आक्रमण आदि ऐसी समस्याएं हैं, जो भारत की सुरक्षा को प्रभावित करती हैं ।

गरीबी, कमजोर आर्थिक आधार, बेरोजगारी, संकुचित क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अलगाववाद और कमजोर संस्थागत संरचना आदि ने राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष गंभीर

चुनौती खड़ी कर दी है । अगर हम वास्तविक रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत मनाना चाहते हैं तो हमें इन समस्याओं के समाधान के लिए काम करना होगा, अन्यथा भारत की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है । बाह्य खतरों की तरफ ध्यान देने से पहले हमें देश की आंतरिक व्यवस्था सही करनी चाहिए । भारत सॉफ्ट स्टेट के रूप में जाना जाता है । गुन्नार मीर्डल ने अपनी पुस्तक एशियन ड्रामा में भारत को सॉफ्ट स्टेट कहा था । सबसे पहले हमें इस छवि से बाहर आना है । यह नकारात्मक छवि इसलिए है, क्योंकि कई मोर्चों पर हमें सही नेतृत्व नहीं मिला और हम नाकामयाब रहे । इस कारण हमारी राजनीति और अर्थव्यवस्था पंगु हो गई । जर्जर विधायिका और अनिश्चय की स्थिति में रहने वाली कार्यपालिका यानी एक प्रकार से पूरी सरकार की अकर्मण्यता के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

भारत के सामने सबसे पहला काम एक ऐसी प्रभावी संस्थागत संरचना का निर्माण करना है, जो राष्ट्रीय मामलों का सही प्रबंधन करे । ऐसी संस्थागत संरचना ही लंबे समय तर राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए लाभप्रद होगी । ऐसा तर्क दिया जाता है कि ढांचागत संरचना और उत्तरदायी सरकार का इस्तेमाल तभी होगा, जब जागरूक, जिम्मेदार, चौकस और सहभागी नागरिक समाज हो । यदि इस तरह का नागरिक समाज है तो फिर मानव संसाधन में अधिकाधिक निवेश की आवश्यकता होती है । इसका मतलब है कि सभी लोगों को अच्छा भोजन मिले, अच्छे कपड़े उपलब्ध हों और अच्छी स्वास्थ सुविधाओं की व्यवस्था हो । वरना भूखे और बेरोजगार लोग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन जाएंगे । कौटिल्य ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अर्थशास्त्र में इस बात का उल्लेख किया है । अत: भारत को अपने संसाधनों का लोगों के बीच सही वितरण करके और सभी नागरिकों की प्रतिष्ठा की रक्षा करके यह दिखाना है कि वह किसी प्रकार का कोई पक्षपात नहीं करता है ।

यह सही है कि अलग-अलग समुदायों को प्राप्त प्रतिष्ठा में हो रहे पक्षपात के कारण भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है । अत: सत्ता में बैठे लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सभी को समान रूप से न्याय मिले और विकास की दौड़ में कोई समुदाय इतना पिछड़ न जाए कि देश को चलाना मुश्किल हो जाए । प्रसिद्ध दार्शनिक राल्स ने जिसे वितरण न्याय कहा है, उसे लागू करने का प्रयास करना चाहिए । सरकार के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी समुदाय को सामाजिक अन्याय या असमानता का सामना न करना पड़े और सभी लोग राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल हों । अगर समाज में असमानता रही और सभी को न्याय नहीं मिला तो विद्रोह हो सकता है, जिसके कारण राष्ट्र खंडित हो सकता है, जैसा कि 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में हुआ । इसी संदर्भ में मैकियावेली का एक कथन है, सरकार को न केवल न्याय करना चाहिए, बल्कि उसे न्यायपूर्ण दिखना भी चाहिए । इसके साथ ही तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या पर काबू पाने की भी आवश्यकता है, ताकि उपलब्ध संसाधनों के साथ सामंजस्य बैठाया जा सके । दोनों के बीच सामंजस्य का अभाव समाज में अस्थिरता और विद्रोह उत्पन्न करता है, जो देश के लिए बात नहीं है । हमें अच्छी अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है, जिसका आधार सशक्त उद्योग और कृषि हो ।

डीजल और रसोई गैस के दामों में इजाफा, यकीनन पहले से सुलग रही महंगाई की अग्नि को और अधिक प्रज्वलित करने के काम को अंजाम देगा । पेट्रोलियम कंपनियों के कथित नुकसान की भरपाई करने के नाम पर पहले पेट्रोल के दाम में और अब डीजल व रसोई गैस के दाम में बढ़ोतरी की गई । तेल कंपनियों के आंकड़े कुछ और ही बयान करते हैं ।

गत वर्ष ओएनजीसी ने तकरीबन 20 हजार करोड़, इंडियन ऑइल ने 3 हजार करोड़ और जीएआईएल ने 3 हजार करोड़ रुपयों का शुद्ध मुनाफा अर्जित किया । भारत के प्रधानमंत्री को एक बेहद काबिल अर्थशास्त्री करार दिया जाता है । क्या फायदा है प्रधानमंत्री की ऐसी काबिलियत का जो आम भारतीय की रोजमर्रा की परेशानियों को दूर करने के स्थान पर उसमें बढ़ोतरी ही करती जा रही हो ।

प्रधानमंत्री एक ऐसी अर्थनीति के निर्माता बन चुके हैं, जो एकदम ही अमीर कॉर्पोरेट सेक्टर को फायदा पहुंचाने की गरज से बनाई गई है। इस अर्थनीति के चलते आम आदमी की जिंदगी दुश्वार हो चली है। गत दो वर्षों से जारी महंगाई दर ने पिछले सभी रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए। अमीर आदमी को यकीनन महंगाई से कुछ भी फर्क नहीं पड़ता, किंतु एक गरीब इंसान की हालत कितनी बदतर हो चली है, इसका कुछ भी अंदाजा शासक वर्ग को संभवतया नहीं है, अन्यथा इस पर इतना बेरहम रूख हुकूमत की ओर से अख्तियार नहीं किया जाता।

विपक्ष के बिखराव और खराब सियासी हालात ने कमरतोड़ महंगाई के प्रश्न पर जनमानस के रोष की अभिव्यक्ति को अत्यंत असहज कर दिया है, अन्यथा अपनी माली हालत को लेकर आम आदमी के अंतस्थल में जबरदस्त ज्वालामुखी धधक रहा है। अमीर तबके के और अधिक अमीर हो जाने की अंतहीन लिप्सा की खातिर आम आदमी को निचोड़ा जा रहा है।

मार्केट इकोनॉमी के नाम पर अब पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों को बेलगाम कर दिया गया है। ऐसा हो रहा कि हुकूमत द्वारा महंगाई के दावानल में पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस को भी डाल दिया गया। महंगाई के प्रश्न पर आम आदमी का रोष इसलिए भी राजनीतिक जोर नहीं पकड़ रहा कि प्राय: सभी राजनीतिक दलों के नेताओं का अपना चरित्र भी कॉर्पोरेट परस्त होता जा रहा है। संसद के सदस्य अपना वेतन अब बीस हजार से बढ़ाकर नब्बे हजार करने जा रहे हैं, जो कि हुकूमत के सेक्रेटरी रैंक के अफसर के वेतन के समकक्ष होगा।

सरकारी आंकड़े खुद ही बयान करते हैं कि गत वर्ष के दौरान खाने-पीने की वस्तुओं के दाम 16.5 की इंफ्लेशन की दर से बढ़े हैं। चीनी के दाम 73 फीसदी, मूंग दाल की कीमत 113 फीसद, उड़द दाल के दाम 71 फीसद, अनाज के दाम 20 फीसद, अरहर दाल की कीमत 58 फिसद और आलू-प्याज के दाम 32 फीसद बढ़ गए हैं। इसके अलावा रिटेल के दामों और थोक दामों में भारी अंतर बना ही रहता है। सरकारी आंकड़े महज थोक सुचकांक बताते हैं, जबकि आम आदमी तक माल पहुंचने में बहुत से बिचौलियों और दलालों की जेबें गरम हो चुकी होती है।

वैसे भी भारत की अर्थव्यवस्था अब सटोरियों और बिचौलियों के हाथों में ही खेल रही है। अपना खून-पसीना एक करके उत्पादन करने वाले किसानों की कमर कर्ज से झुक चुकी है। रिटेल बाजार में **खाद्य पदार्थों के दाम चाहे कुछ भी क्यों न बढ़ जाएँ, किसान वर्ग को इसका फायदा कदाचित नहीं पुँचता। इतना ही नहीं, धीरे-धीरे उनके** हाथ से उनकी जमीन भी छिनती जा रही है।

हिन्दुस्तान के आजाद होने के बावजूद कृषि और कृषक संबंधी ब्रिटीश राज की रीति-नीति में कोई बुनियादी बदलाव नहीं आया। आज भी लगभग वही कानून चल रहे हैं जो अंग्रेजों के शासनकाल में चल रहे थे। देश का 11 करोड़ किसान शासकीय नीति से बाकायदा उपेक्षित है। गत दो वर्षों के दौरान देश का किसान और अधिक गरीब हुआ है जबकि उसके द्वारा उत्पादित खाद्य पदार्थों के दामों में भारी इजाफा दर्ज किया गया। यह समूचा मुनाफा अमीरों की जेबों में चला गया। देश के अमीरों की अमीरी ने अद्भुत तेजी के साथ कुलांचे भरीं। मंत्रियों और प्रशासकों के वेतन में जबरदस्त वृद्धि हो गई। दूसरी ओर साधारण किसानों में गरीबी का आलम है। आम आदमी की दाल-रोटी किसानों ने नहीं, वरन बड़ी तिजोरियों के मालिकों ने दूभर कर दी है।

वस्तुत: समस्त देश में आर्थिक-सामाजिक हालात में सुधार का नाम ही वास्तविक विकास है। एक वर्ग के अमीर बनते चले जाने और किसान-मजदूरों के दरिद्र बनते जाने का नाम विकास नहीं बल्कि देश का विनाश है। निरंतर गति से बढ़ती महंगाई और शोषण के बीच चोली-दामन का संबंध है। महंगाई वास्तव में ताकतवर अमीरों द्वारा गरीबों को लूटने का एक अस्त्र है। इस खतरनाक साजिश में सरकारें भी अमीरों के साथ बाकायदा शामिल है। वास्तव में सरकार ने बाजार की ताकतों को इतना प्रश्रय और समर्थन प्रदान कर दिया है कि घरेलू बाजार व्यवस्था नियंत्रण से बाहर होकर बेकाबू हो चुकी है। सटोरिए, दलाल और बिचौलियें इसमें सबसे अहम किरदार नीभा रहे है।

देश में दुग्ध उत्पाद की कमी है, किंतु केसिन चीज और मिल्क पावडर का निर्यात बदस्तूर जारी है। देश के लोग कृषि उत्पादों की महंगाई से बेहद त्रस्त हैं, किंतु कृषि उत्पादों का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है।

दो साल से सरकार दावा कर रही है कि मूल्यवृध्दी पर काबू पा लिया जाएगा किंतु नतीजा एकदम शून्य रहा। अधिक मांग का दबाव न होने एवं फसलों के भरपूर होने के बावजूद कीमतों की उड़ान क्यों जारी रही है? वायदा बाजार बाकायदा पल्लवित हो रहा है। काले

बाजार और काले अंधेरे गोदामों में किसान को चावल, चीनी, दाल, गेहूं आदि के जखीरे को दबाकर बाजार में चालू आपूर्ति कम कर दी गई । कुछ अनचाहे अधमने सरकारी छापों में ही गोदामों में बाकायदा दबा पड़ा विशाल भंडार दिखाई दे गया । राजकाज और बाजार की मिलीभगत ने अब ऐसे हालात पैदा कर दिए हैं कि राज्य व्यवस्था और बाजार के बीच फर्क महज औपचारिकता ही बन कर रह गया है । काली राजनीति का काले धंधे के साथ अवैध समीकरण भारत की जम्हूरियत और राज व्यवस्था का खास चेहरा बन गए हैं । बायदा बाजारों के चलते खाद्य पदार्थों की किमतें कम नहीं हो पा रही हैं, क्योंकि किमतें कम होने से बिचौलियों और कृषि कंपनियों को घाटा हो सकता है । हमारे देश में इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि एक तरफ गोदामों में अनाज सड़ रहा है और दूसरी तरफ लोग भूखमरी का शिकार हो रहे हैं । बिचौलिए मालामाल हो रहे हैं और किसान बदहाल हैं । वर्तमान राजनैतिक समीकरण ने संभावत: शासक वर्ग को कुछ अधिक ही आश्वस्त कर दिया है कि आम आदमी के रोष से निकट भविष्य में उसकी सत्ता को कोई खतरा नहीं, किन्तु वे ऐतिहासिक सच्चाई को विस्मृत कर चुके हैं कि.....

'कबीर हाय गरीब की कबहु न निष्फल जाए ।
मरी खाल की सांस से लौह भस्म हो जाए ।।'

◆

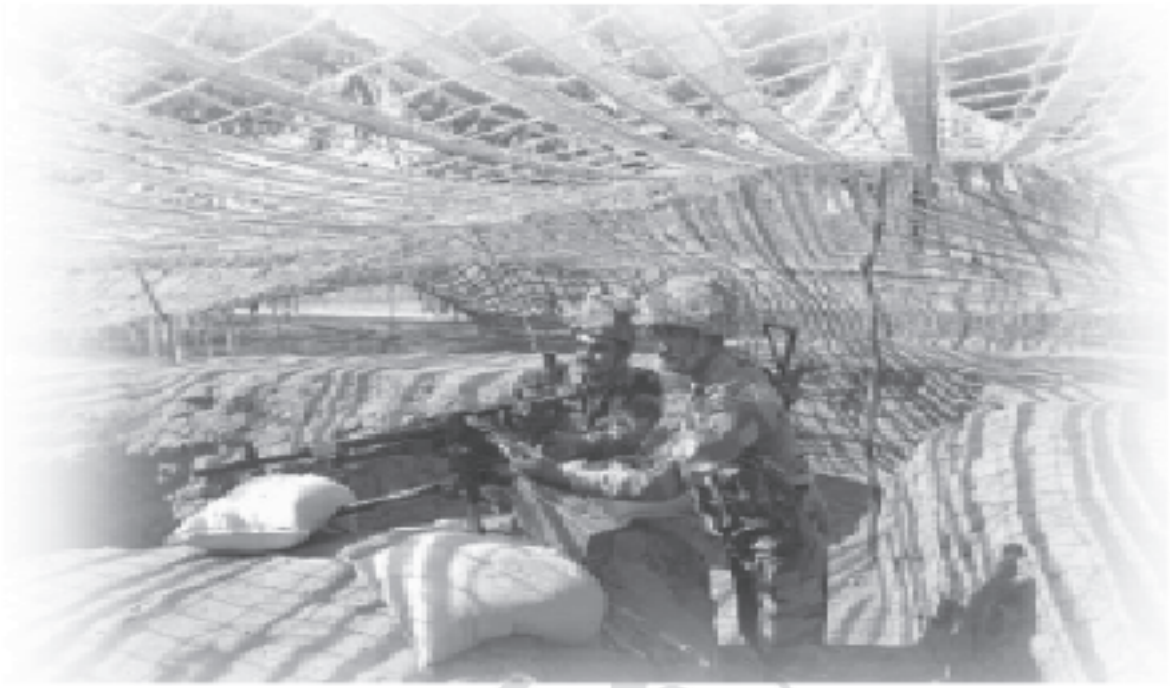

प्रभावी बैंकिंग के लिए कर्मचारियों की भूमिका

– डॉ. रवि गिरहे
बैंक ऑफ इंडिया

"किसी भी कारोबार का उद्देश्य नए ग्राहक पाना और उसे बनाए रखना है ।" प्रबंधशास्त्री – हेड लेविट

आर्थिक उदारीकरण के पश्चात बैंकिंग उद्योग में आमूलचूल परिवर्तन देखे गए है । ग्राहकोन्मुखी बैंकिंग का उदय हो गया है तथा लाभ के दायरे भी सिमट गए है । बैंकों में आपसी प्रतिस्पर्धा से लाभदायकता पर विपरित प्रभाव पड़ा है । 'ग्राहक नही–लाभ नहीं' का नारा बुलंद होने लगा है । बैंकिंग उद्योग के साथ यह दिक्कत है कि उन्हे एक जैसे उत्पाद बेचने है, साथ ही ग्राहकों के साथ अपने रिश्ते सालों तक बनाए रखने है । ऐसे में लाभ के क्षेत्र भी सीमित होते जा रहे है । ऋण देने में धोखे बढ़ते ही जा रहे है । अब हम समझने लगे है कि बैंकिंग उद्योग एक सेवा उद्योग हैं तथा बैंकिंग व्यवसाय का रक्तसंचार ग्राहक है । बैंकिंग उद्योग बैंक के नाम से नहीं वरन् ग्राहकों के नाम से चलता है । बदलते आर्थिक परिदृश्य में अपनी उत्पादकता बढ़ाने के लिए तथा अपने व्यवसाय को अधिक लाभप्रद बनाने के लिए ग्राहक ही एकमात्र मददगार साबित हो सकता है । हम चाहे कितनी भी महंगी तकनीक का उपयोग करे, ग्राहक अगर संतुष्ट नही होगा तो हमारे व्यवसाय का कोई महत्व नही रह जाता । बदलते आर्थिक परिदृश्य में ग्राहक की मानसिकता में भी बदलाव आ गया है । अब वह परंपरागत ग्राहक नही रहा जो बैंकर के इशारे पर नाचता था । अब वह स्वयं अपने निर्णय ले सकता है चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र में रहता हो या शहरी क्षेत्र में । आज हमें हमारे निष्ठावान ग्राहकों को तो साथ में बनाएँ रखना ही है साथ ही नए–नए क्षेत्र खोजकर वहाँ भी नए ग्राहकों की तलाश कर उन्हें बेहतर सेवाएँ देने का संकल्प लेना है । ग्राहकों की संतुष्टि इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि एक असंतुष्ट ग्राहक एक हजार खातों को बिगाड़ने की क्षमता रखता है । ऐसे में हमारी उत्पादकता बढ़ाने के लिए तथा ग्राहकों को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना जरूरी हो गया है ।

- बेहतर ग्राहक सेवा तथा ग्राहक संतुष्टि
- कुशल व अनुभवी मानव संसाधन
- सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग
- वित्तीय समावेशन की संकल्पना को साकार करना
- कुशल नेतृत्व
- सर्वसमावेशी प्रशिक्षण व्यवस्था
- प्रभावी बैंकिंग उत्पाद
- प्रभावी विपणन व्यवस्था

भविष्य में प्रभावी बैंकिंग के लिए उपरोक्त अन्य बातों के अलावा हमें मानव संसाधन को अधिक कारगर बनाना आवश्यक हो गया है ।

प्रभावी बैंकिंग के लिए मानव संसाधन की आवश्यकता –

प्रभावी बैंकिंग तथा उत्पादकता बढ़ाने के लिए जो उपाय सुझाएं गए है उनमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मानव संसाधन की है । बदलते बैंकिंग परिदृश्य में आज प्रत्येक बैंक अपने ग्राहकों को पर्याप्त एवं उचित सेवाएँ प्रदान करने हेतू कटिबद्ध है । इसके लिए नवीन तकनीक के सफल प्रयोग भी किए जा रहे है । सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्राहकों को बेहतर तथा शीघ्र व सस्ती सेवाएँ भी प्रदान की जा रही है । आज का युवा ग्राहक तो बैंक शाखाओं में या कार्यालयों में कतार में खड़ा होना पसंद नही करता, वह तो सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आवश्यक सुविधाएँ घर या कार्यालय पर ही प्राप्त करना चाहता है । लेकिन इसके बावजूद ग्राहक एक बैंक से असंतुष्ट होकर दुसरी बैंक में जाने के लिए मजबूर हो जाता है । क्या कारण है कि एक ही बैंकिंग ढ़ाचा, एक ही उत्पाद, एक जैसी शाखा की बनावट–फर्नीचर, समान ब्याज दर होने के बाद भी ग्राहक उस शाखा या बैंक के व्यवहार से असंतुष्ट रहता है । इसका कारण है मानव संसाधन का योग्य उपयोग न किया जाना या उसपर समूचित ध्यान न दिया जाना ।

हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मानव संसाधन किसी भी संस्था की जान होती है । अच्छी मानव संसाधन विकास पध्दतियों का व्यवहार, ग्राहकों और कर्मचारियों में संतोष उत्पन्न कर, वित्तीय और अन्य निष्पादन सूचकों को प्रभावित कर सकता है । बैंकिंग क्षेत्र में उत्पादकता तथा लाभदायकता बढ़ाने के लिए मानव संसाधनों की निपुणता विकसित करने के साथ-साथ कर्मचारियों की सोच, मनोवृत्ति एवं व्यवहार में परिवर्तन करने के कारगर उपाय ढूंढने आवश्यक है । मानव संसाधना के उत्कृष्ट प्रबंधन से हम हमारे कर्मचारियों की मानसिकता बदल सकते है । जिससे ग्राहकों की संतुष्टि के साथ ही उत्पादकता बढ़ाने का सफल प्रयास किया जा सकता है । इसके लिए विभिन्न बैंक शाखाओं में फ्रंट डेस्क पर यानी काऊंटरों पर कार्यरत कर्मचारियों का योग्य चुनाव, योग्य व प्रभावी स्थानांतरण व पदोन्नति नीति, योग्य प्रशिक्षण नीति, कर्मचारियों के चिकित्सा दावे, अवकाश, भविष्यनिधि, आदि पर योग्य व शीघ्र निर्णय लेने से उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है तथा उनके बेहतर व्यवहार से बैंकिंग उद्योग में उत्पादकता प्रशिक्षण नीति बढ़ाने के प्रयासों को सफलता मिल सकती हैं ।

बैंको में कार्यरत कर्मचारियों की बदलती मानसिकता –

बैंकिंग क्षेत्र में आए निम्नलिखित परिवर्तनों ने बैंकों में कार्यरत कर्मचारियों को उनकी मानसिकता तथा परंपरागत सोच बदलने के लिए मजबूर कर दिया है ।

- 1990 के पश्चात आए उदारीकरण के दौर में ग्राहकों का सशक्तीकरण
- ग्राहकों की बैंकिंग के प्रति बदलती मानसिकता
- सूचना प्रोद्योगिकी की क्रांति से ग्राहकों में आई जागरूकता
- मिडिया, सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ग्राहकों को सचेत किया जाना
- बढ़ता शिक्षित युवा व महिला वर्ग
- मध्यवर्ग के लोगों का आर्थिक रूप से सशक्त होना
- ग्राहकों का अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना
- उच्चप्रबंधन का ग्राहकोन्मुखी होना
- ग्राहक सेवा तथा ग्राहक संतुष्टि का महत्व समझना
- कड़े कानूनी प्रावधान
- साक्षरता, रोजगार के अवसर, वित्तीय साक्षरता में वृद्धि

किसी भी देश की सुरक्षा के लिए शक्तिशाली तथा प्रभावी सेना के जवानों की आवश्यकता होती है । ये वे जवान होते है जो अपने देश की सुरक्षा के लिए अपनी जान भी न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते है तथा अपने देश को विजय दिलाने के लिए हरसंभव प्रयास करते है । बैंकिंग क्षेत्र में फ्रंट डेस्क पर कार्यरत कर्मचारी इसी श्रेणी में आते है । हमारी बैंकिंग अर्थव्यवस्था की सुरक्षा इन्ही के हाथों में है तथा प्रभावी ग्राहक सेवा व ग्राहक संतुष्टि इनका ध्येय है ।

प्राय: यह देखा गया है कि किसी भी बैंक की व्यवस्था त्रिस्तरिय होती है जिसमें प्रधान कार्यालय, विभिन्न अंचलों में कार्यरत प्रशासनिक कार्यालय तथा सभी क्षेत्रों में फैली हुई शाखाएँ प्रमुखता से समाविष्ट है । जहाँ तक नेतृत्व या कार्य का सवाल है प्रधान कार्यालयों की भूमिका नीतिनिर्धारक एवं मार्गदर्शन के रूप होती है, विभिन्न अंचलों में कार्यरत आंचलिक या क्षेत्रीय कार्यालय प्रधान कार्यालय की नीतियों पर अंमल करने हेतु मजबूत प्रशासकिय भूमिका निभाते है, अंत में इन नीतियों का कार्यान्वयन करने की जिम्मेदारी शाखाओं की होती है । इसलिए शाखाओं में कार्यरत नेतृत्व प्रभावी, कुशल, सक्षम तथा जिम्मेदार होना आवश्यक है । इससे भी महत्वपूर्ण है शाखाओं में फ्रंट डेस्क पर कार्यरत वह कर्मचारी जिसे हम **'सेना का जवान'** कह सकते है । यह वह कर्मचारी है जो बदलते आर्थिक परिदृश्य में अपनी बैंक की उत्पादकता तथा लाभप्रदता बढ़ाने में पूरी मदद कर सकता है । इसलिए फ्रंट डेस्क पर कार्यरत स्टाफ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है तथा उन्हें कुशल बनाना हमारा प्रथम दायित्व है ।

प्रभावी मानव संसाधन नीति से कार्यरत कर्मचारियों को कुशल बनाने के फायदे –

प्रभावी मानव संसाधन नीति से कार्यरत कर्मचारियों को कुशल बनाने के अनेक फायदे बैंकिंग उद्योग के साथ अर्थव्यवस्था तथा ग्राहकों को मिल सकते है, जिसे निम्नानुसार प्रस्तुत कर सकते हैं ।

- प्रभावी ग्राहक सेवा तथा ग्राहक संतुष्टि
- लाभप्रदता बढ़ाने के लिए
- कार्यनिष्पादन की मात्रा तथा गुणवत्ता में वृद्धि
- पूंजी पर्याप्तता
- बैंक की नीतियों को कारगर बनाने के लिए तथा बैंक की साख में वृद्धि

- वित्तीय समावेशन की संकल्पना को साकार करना
- वित्तीय साक्षरता का प्रचार-प्रसार
- बैंकों के नए उत्पादों का प्रभावी विपणन
- ग्रामीण विकास में मदद

इसी के साथ ऐसे कुशल कर्मचारी अपनी बैंक को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में बनाए रखने में मदद कर सकता है, यही नहीं तो एक सच्ची सामाजिक सेवा तथा राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है ।

कर्मचारियों की अनास्था का कारण –

कुशल कर्मचारियों की बैंकिंग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है इसमें कोई भी संदेह नहीं है । राष्ट्रीयकरण के पश्चात 1990 में आए आर्थिक उदारीकरण के दौर में तथा वर्तमान आर्थिक मंदी से निपटने के लिए बैंक कर्मचारियों का बड़ा योगदान रहा है । हालांकी ग्राहकों की अनेक शिकायते कर्मचारियों के विरोध में आती रहती है, बावजूद इसके अधिकांश कर्मचारी अपने कर्तव्यपरायन में लिप्त रहते है । उनके कार्यक्षमता का ही नतीजा है कि आर्थिक मंदी के दौर में भी हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती रही है । फिर भी यह देखने में आया है कि अधिकांश कर्मचारी अपने कार्य के प्रति उदासिन रहते हैं । हमें इस बात का भी पता लगाना चाहिए कि बैंक में कार्यरत इन कर्मचारियों में अपने कार्य के प्रति अनास्था का क्या कारण हो सकता है, जिससे हमारी उत्पादकता तथा लाभदायकता प्रभावित होती हो ।

- स्टाफ की कमी कारण काम बढ़ता जोझ
- कर्मचारियो की बढ़ती हुई उम्र
- परंपरागत सोच तथा संकुचित मानसिकता
- नई तकनीक का डर
- बैंकिंग ज्ञान तथा उत्पादों की जानकारी का अभाव
- प्रेरणा या प्रोत्साहन का अभाव
- योग्य व कुशल नेतृत्व एवं निर्णय क्षमता का अभाव
- मानव संसाधन विभाग की निष्क्रियता तथा औद्योगिक संबंध विभाग का कड़ा रुख
- शाखाओं का विस्तार लेकिन मानव संसाधन का अभाव
- कर्मचारियों के वेतन की विसंगतियाँ

कर्मचारियों को कुशल बनाने के कुछ उपाय –

बैंकिंग उद्योग में कार्यरत कर्मचारी सेना के जवान की तरह होते है । ऐसे कर्मचारियों को कुशल तथा खुश रखना हमारी उत्पादकता तथा लाभप्रदता पर सकारात्मक प्रभाव डालता है । मानव संसाधन विभाग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । इन्हें कुशल बनाने के लिए निम्न कुछ मुद्दों पर ध्यान देना आवश्यक है ।

- योग्य व प्रभावी प्रशिक्षण योजनाएँ (ऑन दि स्पॉट प्रशिक्षण व्यवस्था)
- नई भर्ती की आवश्यकता तथा पुराने व नए कर्मचारियों में समन्वय का प्रयास
- निष्पक्ष, प्रभावी व योग्य स्थानांतरण एवं पदोन्नति नीति
- व्यक्तित्व विकास हेतू प्रभावी सेमिनारों/कार्यशालाओं का आयोजन
- प्रभावी व सक्रिय मानव संसाधन विभाग
- औद्योगिक संबंध विभाग की मानसिकता में बदलाव
- आर्थिक प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता
- कुशल नेतृत्व की आवश्यकता
- सूचना प्रौद्योगिकी को सरल बनाना
- ग्राहकोन्मुखी कार्यक्रमों का आयोजन
- ग्राहकों से भावनात्मक रिश्ते बनाना
- कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की आवश्यकता

सारांश –

'संत बिपट सरिता गिरि धरनी परहित हेतु सबन्ह के करनी'

संत कवी तुलसीदास जी कहते है कि संत, वृक्ष, नदी, पर्वत और पृथ्वी इन सब की क्रियाएँ या कार्य दूसरों के हित के लिए ही होते है । बैंकिंग उद्योग में कार्यरत कर्मचारियों का भी कार्य कुछ इसी प्रकार है । वे भी अगर निस्वार्थ भाव से अपना कार्य करते है तो बैंक की उत्पादकता तथा लाभदायकता दोनों में वृद्धि संभव है । हमें यह पता है कि बदलते बैंकिंग परिदृश्य में स्वार्थ के साथ ही परमार्थ भी करना है । जब तक हमारे कर्मचारी आंतरिक जीवन में परिवर्तनशील नहीं रहेंगे तब तक बाह्य जीवन में विकास संभव नहीं हो सकता तथा हमारे समाज व राष्ट्र का भी विकास नहीं हो सकता । हमारे कर्मचारियों

के नम्र व्यवहार से हम सारी दुनिया को जीत सकते है । हमें इस तथ्य को जानना होगा की वैश्विक बैंकिंग में लगातार बदलाव हो रहे है तथा जानलेवा प्रतिस्पर्धा में बैंकों को अपना अस्तित्व बनाए रखना कठीन होता जा रहा है, ऐसे में एक छोटा सा कर्मचारी भी कोई गलती करता है तो उसका असर सीधे ग्राहक सेवा तथा संतुष्टि पर पड़ता है । इसलिए ऐसे कर्मचारियों की जिम्मेदारी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है । ऐसे कर्मचारी स्थानीय होने के साथ ही लोगों से जुड़े हुए होते है इसका लाभ निश्चित ही बैंक को प्राप्त हो सकता है । बैंक प्रबंधक को भी चाहिए कि वे अपने कर्मचारियों का चुनाव करे । आज ग्राहकोन्मुख सेवाएँ तथा नीतियों की आवश्यकता है, एक असंतुष्ट ग्राहक हजारों खाते खराब कर सकते है और वह भी हमारे व्यवहार से । इसलिए नेतृत्व की यह जिम्मेदारी है कि वह व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर योग्य व कुशल कर्मचारियों को कार्य सौपने का प्रयास करे तथा समय-समय पर कठोर मापदण्डों के साथ योग्य मानव संसाधन प्रबंध को अपनाकर बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने हेतू प्रयास करना चाहिए । यह समस्या कोई कठीन तो नही है केवल अच्छी सुझबुझ तथा नेतृत्व की आवश्यकता है ।

◆

भक्ति

भक्ति कोई खेल या कोई व्यापार नहीं ।
सिर्फ समर्पण है भक्ति अधिकार नहीं ।
सर्वस्व समर्पण करना पड़ता है,
अहंभावना भक्ति को स्वीकार नहीं ।
भक्ति का दावा है हर कोई कर सकता,
भक्त नहीं बनता गर भक्ति की सार नहीं ।
विश्वास की नींव पर अम्बर को छू लेती है,
कायम ही नहीं रहती गर एतबार नहीं ।
प्रकट भक्त को कर देती कुल दुनिया में,
करना पड़ता भक्ति का प्रचार नहीं ।
हर पल हर क्षण सांसो के संग चलती है,
भक्ति के लिए निश्चित दिन या वार नहीं ।
सांझीवालता का प्रतिक होती है भक्ति,
रहती दिलों में साथी फिर दोबार नहीं ।

विश्वास... आत्मविश्वास.... सफलता

- विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है । विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को भी पत्थर दिल बना सकता है ।
- हम चाहे तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य खुद लिख सकते है । और अगर हमको अपना भाग्य लिखना नहीं आता तो परिस्थितियां हमारा भाग्य लिख देंगी ।
- सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है, और असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है ।

– नामदेव रामचंद्र भोईनकर
तकनिकी सहायक,
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

रूठी बारिश

ईशा संदीप केळकर, कोंकण रेलवे

जब मैंने ये विषय सुना तो मुझे खुशी भी हुई और थोड़ा आश्चर्य भी । खुशी इस बात की हुई की हाँ, थोड़ा नया विषय है । और आश्चर्य इस बात का हुआ की सबको खुशियाँ देनेवाली बारीश कभी हमसे रूठ सकती है? मुझे पहले यकीन नही हुआ । फिर थोड़ा सोचने के बाद मुझे मेरे सवाल का जवाब मिला । वो जवाब था, हाँ । बारिश रूठ सकती है । रूठ सकती है नही रूठ गई है । अब आप कहेंगे की, क्या तुम भी । बारिश कैसे रूठ सकती है । उसे थोड़ी ना हमारी तरह भावनाएँ है? हाँ । मैं मानती हूँ की बारिश को हमारी तरह भावनाएँ नही है, लेकिन वो हमारी वजह से ही रूठ गयी है । आप सोचेंगे हमारी वजह से? हाँ, हमारी वजह से । कैसे ये मैं बताती हूँ ।

हमने अपनी दादी-नानी से, माँ से ये सुना होगा की उनके जमाने मे वर्षा के चारों महिनों में धुआँधार बारिश होती थी । मई के महिने में भी पानी की कमी महसूस नही होती थी । लेकिन आज दिसंबर के महिने में ही टैंकर बुलाने पड़ते है । मई के महिनें में तो पानी से सब बेहाल हो जाते है । ऐसा क्यूँ?

पहले के जमाने में बहुत से लोग खेती करते थे । और लोग नैसर्गिक वस्तूओं का उपयोग करते थे । कारखाने भी बहुत कम थे । जो वस्तूएँ लोग इस्तेमाल करते थे, वो पर्यावरणपूरक थी । उससे किसीको हानी नही पहुँचती थी । लेकिन आज सब जगह प्लास्टिक के पानी पहाड़ दिखाई देते है । कारखानों की संख्या कितनी बढ़ गई है । उसके धुओं से तो आकाश ढक गया है ।

अरे, मैं तो भूल गई की बारिश रूठ जाने का प्रमुख कारण है पेड़ों का काँटना । पहले जमाने में बहुत से पेड़-पौधे, जंगल होते थे । उसके कारण ही तो बारिश के बादल हम सब पे बारिश की रिमझिम फुँहारे बरसाते थे । लेकिन आज आबादी की बढ़ने के कारण रहने के लिए घर, मकान और इमारतों के लिए लकड़ियों की जरूरत पड़ती है । बढ़ते हुए औद्योगिकरण की वजह से जंगल, पहाड़ उजाड़ हो रहे है । नई-नई औद्योगिक क्रांती के वजह से आदमी के बदले मशिनरियों से जंगल, पहाड़ उजाड़ हो रहे है । लकड़ियों के लिए पेड़ों को वे काँटते है । मैं मानती हूँ की, पेड़ों को काँटना कभी कभी जरूरी होता है । लेकिन जितनी मात्रा में पेड़ काँटे जाते है उतनी मात्रा में पेड़ लगाये नही जाते है । जब हम एक पेड़ काँटते है, तो हमें दस पेड़ लगाने चाहिए । हम दस पेड़ काँटते है और एक भी पेड़ लगाते नही है । तो बताइए बारिश हमसे रूठेगी ही ना? हमने सुना होगा की बारिश के बादलों पर 'सिल्वर आयोड़ाईड' नामक रसायन का प्रयोग करते है, जिसके कारण कृत्रिम वर्षा हो सकती है पर मैं कहती इतना सब करने की क्या जरूरत है।

क्योंकि पिछले साल में कम बारिश होने के वजह से याने बारीश रूठ जाने के वजह से देश में बहुत जगह सुखा पड़ा था। खेत, नदी, तालाब सुख गये थे । जानवरों का पिनें का पानी की समस्या चारों की समस्या का सामना करना पड़ रहा था । हजारो जानवरों की आदमीयों की जाने जा रही थी । महागाई बढ़ रही थी । सरकार के सामने समस्यापर कोई उपाय करने की जिम्मेदारी आ जाती है। सरकार के साथ आम जनता भी बेजार हो जाती है । महाराष्ट्र के लातूर जिला में पिछले तीन साल से पानी की कमी महसूस हो रही थी । याने लातूर में बारीश तो पुरी तरह रूठ गयी थी । याने लातूर में बारीश तो पुरी तरह रूढ गयी थी । इसके उपर केंद्र सरकार और रेल मंत्रालय के सहायता से लातूर में ट्रेनों से पानी पहुचाँने का काम इतिहास में पहली बार किया था। लातूर में करीब पंधरा करोड़ लिटर पानी पहुँचाया गया इसलिए जी सुविधा आवश्यक थी उसे पुरा किया गया । लोगों ने याने शासन कर्मचारी, लोकनेते, पुढ़ारी इन्होनें पानी समस्या हल करने के लिए पुराने नदी, नाले, तालाब, कुएँ की साफ करने का काम आदमीयों की सहकार्य से किया गया । जो नदी नाले पहले जैसे कुछ मात्रा में तो आराम से साँस ले सके । अनेक संख्या गाव के आमदी से सरकार के मददत के बीना काम किया । महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने जलयुक्त शीवार योजना प्रारंभ कोई । इसीसे पानी की समस्या की थोड़ी राहत मिली । इसलिए आपकी आनेवाले दिनों मे जल का नियोजन करना पड़ेगा । जैसे हम अपने जन्मदिन अपने सगे संबंधियों के साथ खुशियाँ बाँटते है । लेकिन हम एक पेड़ लगाँए तो पुरी दुनिया को खुशियाँ बाँट सकते है । मैने तो शुरुवात की है। कहिए करेंगे ना रूठी बारीश को मनाने के लिए हमारी मदद?

◆

ग्रीन बिल्डिंग (हरित भवन)–भविष्य की जरूरत

बा. सु. नाड़गे
वरिष्ठ क्षेत्रिय अभियंता, रत्नागिरी

हमारे देश की आबादी लगभग 126 करोड़ बन चूँकी है । बढ़ती आबादी के कारण मुलभूत सुविधाएँ की माँग बढ़ रही है । उसमें खुद का मकान होना अनिवार्य बन गया है । घरेलु बांधकाम उद्योग तेजी से बढ़ रहा है । उससे हमारी अर्थव्यवस्था बढ़ रही है । सामान्य रूप से बनाएँ हुए मकान से पर्यावरण को हानी पहुँच रही है । आदमी का स्वास्थ भी बिगड़ रहा है । हर जगह कॉंक्रीट जंगल बढ़ रहे है । अभी इस क्षेत्र में ग्रीन बिल्डिंग संकल्प लाना जरुरी है ।

ग्रीन बिल्डिंग ऐसी निर्माण है कि जहाँ पानी की खपत कम से कम होती है, ऊर्जा का उपयोग उच्च क्षमता से होता है और नैसर्गिक स्त्रोतो का उपयोग अच्छी ढंग से होता है । ग्रीन बिल्डिंग का मूल सिध्दांत और तकनिकी से घरेलु बांधकाम उद्योग क्षेत्र में पानी का इस्तेमाल बढ़ी कार्यक्षमता से होता है । घर की अंदर किए गये संरचना से उपभोक्ता की आरोग्य/आराम बढ़ता है । इससे उपभोक्ता की कार्यक्षमता बढ़ती है । ग्रीन बिल्डिंग की लागत राशी सामान्य बिल्डिंग के निर्माण से थोड़ी अधिक होती है । प्राकृतिक वातावरण मिलने के कारण कृत्रिम भौतिक संसाधनो का इस्तेमाल न्यूनतम होता है, इससे इनके दुष्प्रभावों से मुक्ति मिलती है । इन में कचरे की पैदास भी कम होती है । इन बिल्डिंगो के निर्माण की खासियत यह होती है कि इसमें रहने वालों की हर सुविधा का ख्याल रखा जाता है । इससे ग्लोबल वार्मिंग नियंत्रण में रहता है और कम उत्सर्जन भी कम होता है ।

ग्रीन बिल्डिंग की विशेषताएँ –

1) लँड स्केपींग (प्राकृतिक दृश्य) का न्यूनतम विचलन तथा कार्यस्थ भूमि का कम से कम उत्खनन ।
2) बिल्डिंग सामग्री का पुनश्चः उपयोग तथा पर्यावरण पूरक सामग्री ।
3) ऊर्जा कार्यक्षम सामग्री का इस्तेमाल ।
4) नवीकरण होनेवाली ऊर्जा का इस्तेमाल ।
5) कम बिजली खपत और सौर ऊर्जा का अधिकांश प्रयोग ।
6) 'हरितभवन' में गर्मी में ठंड और सर्दि में गर्म बने रहती है ।
7) इंसुलेटेड दिवारों और छतों के भितर 60% गर्मी कम हो जाती है ।
8) वातानुकूलित और हवा गर्म करने पर होनेवाले बिजली खर्च में कमी ।

'हरित भवन' यानी 'ग्रीन बिल्डिंग' स्मार्ट नगर नियोजन का हिस्सा है । जो इको फ्रेंडली निर्माण से जुड़ा है । पर्यावरण में कार्बन डाइ ऑक्साईड का उत्सर्जन कम होगा । इसका संचालन किंमत 40 से 50% कम होती है । पानी की खपत भी 20 से 30% कम होती है । दिनप्रकाश और दृष्यता 12 से जादा होती है । अंदर की हवा की गुणवत्ता स्वास्थवर्धक होने उपभोक्ता की कार्यक्षमता बढ़ती है । इसलिए ग्रीन डिझाइन मानव मित्र तथा पूरक और अर्थिकदृष्टिकोन से किफायती है । इससे सबको याने भागधारक, मालिक, उपभोक्ता और आम आदमी को फायदेमंद है । जो ऐसे शहर और भवन जो इस देश की नागरिक जरूरत पूरी करें, ये हमारे प्रधानमंत्री मा. नरेंद्र मोदीजी का सपना है ।

◆

तुम साथ हो.....

तुम साथ हो जब अपने, सारा संसार प्यारा लगता है ।
तुम साथ हो जब अपने, ये जहान एक हँसी नजारा लगता है ।।
तुम साथ हो जब अपने, होंगी दिल की सारी मन्नतें पूरी ।
तुम साथ हो जब अपने, हो गई गमों से कोसों दूरी ।।
तुम साथ हो जब अपने, कर लूँगी संकटो से हँसकर सामना ।
तुम साथ हो जब अपने, दिखा दोगे मेरे अच्छाई–बुराई का आईना ।।
तुम साथ हो जब अपने, मानो ईश्वर मेरे साथ है ।
तुम साथ हो जब अपने, ना कोई छुपा राज ना कोई छुपी बात है ।
तुम साथ हो जब अपने, हो गयी मेरी पूरी कविता ।
तुम साथ हो जब अपने, चल पडेगी मेरी जीवन–सरिता ।

– ईशा संदीप केळकर
कोंकण रेलवे

राजभाषा रत्नसिंधु

अध्यक्ष
श्री. वि.वि. बुचे
महोदय के
सेवा निवृत्ती पर
समिति द्वारा
निरोप समारोह

क्षेत्रीय रेल प्रबंधक श्री.निकम, श्री.सुहास विद्वंस,
केंद्राध्यक्ष, आकाशवाणी, श्री.शिरीष कुन्दे, सहाय्यक आयुक्त, सीमा शुल्क मंडल तथा कोर कमेटी सदस्य

नये कार्यालय प्रमुखों का स्वागत

श्री. प्रदीप कांबले
उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया

श्री. धनंजय कदम
सहा.आयुक्त,
केंद्रीय उत्पाद शुल्क

श्री. देवदत्त शेट्ये
सहा.आयुक्त,
सीमा शुल्क मंडल

श्री. अनिल कोतवाल
वरिष्ठ प्रबंधक,
विजया बैंक

राजभाषा

रत्नसिंधु

पिछली बैठक
की झलकियां...

स्वागत

प्रार्थना

राजभाषा रत्नसिंधु

राजभाषा रत्नसिंधु
अर्ध वार्षिक
हिंदी पत्रिका का विमोचन

राजभाषा

रत्नसिंधु

हिंदी दिवस तथा
हिंदी पखवाडा
14 सितंबर से
30 सितंबर 2016

सदस्य कार्यालयों ने मनाया हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाडा

आकाशवाणी

बैंक ऑफ इंडिया

तट रक्षक

समुद्री उत्पाद

भारत की कन्याएं

कन्या परमेश्वर की बगीचे मे एक अद्भुत संरचना है जो अल्प पानी, कम रोशनी के साथ खिलता है; समाज का एक अभिन्न अंग है । बड़ी हो कर समाज का पोषण करती है, परंतु उसे मिलता क्या है? हर बात के लिये उसे उसकी अधिकार का अहसास सबको देना पड़ता है । उसे अपनी परिवार मे भी आवाज उठानी पड़ती है । समाज उसको दुसरा दर्जा देती है । भले ही आज हम इक्कीसवीं सदी में वास करते हो, परंतु हमारी सोच कोई पूरानी रूढ़ीवादी इन्सान की है । जाति एवं समुदाय की सम्मान के नाम पर लड़कियों को अंधकार में रखा जाता है, इसका जबाब कोई दे सकता है भला? माँ बाप भी अपनी परिवार मे लड़का एवं लड़कियों के बीच असमान व्यवहार करते है । सदियों से चंद लोगों ने समाज में ऐसा दबाव बनाया है की आधुनिक होते हुये भी आज कन्याएं पीड़ित है, उन्हे मार दिया जाता है । जबकि, विश्व में कन्याओं की अधिकार को ले कर चहल पहल चालू है, फिर भी उनकी सफलता का अनुपात असपान है ।

आज कन्याएं किस समस्याओं से ग्रस्त है यह सबको मालूम है । यदि इन समस्याओं को गहराई से विचार किया जाए, तब पता चलता है की कन्याएं पीड़ित होने के कारण क्या है । जो, आम समस्या समाज में है, यह लिंग असमानता को लेकर है । अगर हम पुराण युग में झांक कर देखेंगे, तो पाते है कि उस समय कन्याएं शिक्षित थी, वे यज्ञ करने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी और पवित्र ग्रंथों से श्लोक पडती थी । रामायण युग के बाद लड़कियों को दिया जानेवाले अधिकारों में धीरे-धीरे कटौती की गई और एक ऐसी स्थिती आयी जहां लड़कियों को अधिकार ना के बराबर रहा, या समाज में दूसरा दर्जा दिया गया । उस समय लड़कों की माँ बनना एक गौरव की बात थी और उसे दुआ दिया जाता था । बाद के समय में कन्याओं को जन्म देना अपराध माना गया । जिस कन्या को घर की लक्ष्मी माना जाता था, उसे सब बोझ समझने लगे । यह कन्याओं का अपमान है और संगीन अपराध है । समाज में यह सोच पैदा हो गयी की लड़का ही सिर्फ मरे हुए माँ-बाप को पिंड़ दान दे सकता है, एवं वंश को आगे बढ़ा सकता है । इस बात को समाज व्यापक प्रचार प्रसार चंद लोगों के द्वारा किया गया । इस लिये कन्या-लड़कियों को समाज कमजोर समझने लगा । उन्हें सिर्फ बच्चे पैदा करने का जरिया बताया । इस मामले में अगर लोगों की मंतव्य लिया जाऐ तो, देखा जाएगा की लगभग 75 प्रतिशत लोग कन्या जन्म के विरुद्ध में है । इसका मतलब लोगों की सोच में कोई परिवर्तन नही हुआ है । अब भी देश में विभिन्न स्थानों में बाल विवाह का मामला सामने आता है ।

हम खुद को इक्कीसवीं सदी के नागरिक बताते है, खुद को आधुनिक और सभ्य मानते है । जब कन्या-लड़कियों की समानता और अधिकार की बात आती है, तो हम अलग अलग सोच रखते है । समाज में अपनी इज्जत के लिये परिवारजन कन्या भ्रूण हत्या करते है । इस के लिये उनके मन में कोई अवशोष या पश्चाताप नहीं है ।

कारण स्वरूप शहर और महानगरों में बहुत सारे अस्पताल में अवैध रूप से कन्या भ्रूण हत्या होने लगी है । गौर करने लायक यह बात है की परिवार में बुजूर्ग महिलायें इस अपराध में शामिल होती है और इसे बढ़ावा देती है । जब कोई छोटे-छोटे गांव एवं शहर में जाते है, वहाँ जब लड़के खेलते हुए दिखते है, तब लड़कियां घर के छोटे-मोटे काम करती हुई दिखाई देती है । यह एक आम दृश्य है । कोई-कोई इसे उनकी परिवार में आर्थिक स्थिति के खराब होने के बारे में बताते है, तो कोई-कोई इसे कन्याओं,लड़कियों के प्रति नजरिया के बारे में बताते है । मामला जो कुछ भी हो, इस से यह प्रमाणित होता है कि लड़कियों की माता-पिता उनकी अवहेलना करते है ।

भारत के लोगों में लड़कियों को अभिशाप के रूप मानते है और इसलिए उनसे अक्सर दुर्व्यवहार किया जाता है । माँ-बाप उन्हें अपने प्यार से दूर रखते है और लड़के के लिए उम्मीद रखते है । माँ-बाप को यह लगता है कि लड़कियां अवांछित है, इसलिए उनके विकास के लिए परवाह नहीं करते है । इसलिए कन्याएं-लड़कियां भारत में सबसे अधिक कुशोषण के शिकार होती हैं ।

पारंपारिक पुरुष प्रधान, सामाजिक-आर्थिक एवं धार्मिक ढांचे में कन्याओं को दूसरी स्तर के दर्जे के लिए मजबूर किया जाता है । विश्वास और किंवदन्ती से यह पुष्टि है कि, वह अपमान, असुविधाजनक

अधीनता की जिंदगी एवं परिवार में अपने माता-पिता और अन्य पुरुष सदस्यों पर पूर्ण निर्भरता से जकड़ी हुई है ।

वास्तव में लड़कियों का जीवन अनिश्चितता एवं कठिनाई से भरा हुआ है । यह भी कहा जा सकता है की उनका जीवन कांटो से भरा बिस्तर है । लड़कियों जंगल में बढ़े हुए वह फल है जो बिना खाद और पानी के देख-रेख के जीवित रहने के लिए कठीन प्रयास कर रही है ।

यह ऋषी मुनियों का लड़कियों के प्रति अधिक प्यार था अथवा लड़कियों के प्रति घृणा, जो उनको लड़कियों की अधिकार का हनन करने के लिए मजबूर किया । सिर्फ आज नहीं, पुराण युग से लड़कियां-कन्याओं ने हर क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुये कठिन से कठिन परिस्थिति में हमेशा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है । इन महान लड़कियों में से विदुषी गार्गी, अनुसया तथा आधुनिक भारत की कल्पना चावला, सुनिता विलियमस्, विजयालक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी, सभी लड़कियों के लिये आदर्श बनी है । शिक्षा क्षेत्र में देखा जाए तो लड़कियां परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करती है । फिर भी सरकारी बेसरकारी कार्यक्षेत्रों में लड़कियों को लिंग असमानता का सामना करना पड़ता है। आजकल लड़कियां पहलेवाले वस्त्र को लेकर समाज में असहनशिलता का वातावरण पैदा हुआ है । बलात्कार जैसे अपराध लगातार महानगरों में होते रहते है । इस वजह से लड़कियां असुरक्षित महसूस कर रही है । यह हमारी गिरी हुई शोच को दर्शाता है ।

लड़कियों की संरक्षण के लिये संविधान में प्रावधान किया गया है । घरेलू हिंसा सबसे बड़ी समस्या है ।

सर्व शिक्षा का अभियान चलाने के बावजूद विभिन्न शिक्षा अनुष्ठानों में लड़कियों की उपस्थिती नाम मात्र है । सरकार, सामाजिक और सेवाभावी अनुष्ठान और मीडिया इस विषय पर समाज में जागरूकता फैलाना आवश्यक है । बहुत दिन से लड़कियों को मिलिट्री में काम करने के लिये मौका नहीं दिया जाता था । अब लड़कियों को लड़ाकू विमान चलाने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

हमारे देश में विभिन्न राज्यों में दहेज लेने-देने की प्रथा अब भी चालू है । यह मामला खुल कर न आने की वजह से दोषियों को उचित समय पर दंड नहीं मिलता है । जातिवाद, हिंसा, पुरातन काल से प्रचलित है । कानून के वजह से यह भूमिगत हुआ है । परंतु लोगों की अचेतन मन में यह छुपा हुआ है । देश में अलग अलग प्रांतो में अखबार पर छिपे हुए खबर से जातिवाद हिंसा पढ़ने को मिलती है । सबसे बड़ी खामियां यह है कि महिलायें-लड़कियों की अधिकार के खिलाफ खड़े होते है । शासन के द्वारा बहुओं को जलाने जैसे मामले इस के कारण समाज में होतें है ।

भारत सरकार द्वारा बलात्कार पीड़ितों को न्याय एवं दोषियों को दंड देने के लिये (किशोर न्याय (बच्चों का देखभाल और संरक्षण) विधेयक, 2015) लाया गया है । फिर भी बलात्कार के मामलें कोई कमी नहीं हुई है । लड़कियों को सशक्त बनाने के लिये निम्न लिखित कानून बनाएं गये है ।

- The National Policy for Children, 1974
- The National Plan of Action For Children, 2005
- The Pre-natal Diagnostic Tecniques (Regultion and Prevention of Misuew) Act, 1994
- The Immoral Traffic (Prevention) Act 1986
- The Juvenile Act of 2000 (नया विधेयक वर्ष 2015 में लाया गया है ।)
- Indian Penal Code
- Balika Samriddhi Yojana.
- Kishori Shakti Yojana.

एक आंकड़े के अनुसार निम्नलिखित विवरण सामने आया है :

प्रती 7 मिनिट में लड़कियों के खिलाफ जूर्म किया जाता है ।

प्रती 26 मिनिट में लड़कियों के साथ छेड़-छाड़ की जाती है ।

प्रती 34 मिनिट में बलात्कार किया जाता है ।

प्रती 42 मिनिट में यौन उत्पीड़न का मामला सामने आता है ।

प्रती 43 मिनिट में लड़कियों का अपहरण होता है ।

प्रती 93 मिनिट में लड़कियों को दहेज के लिये जला कर मार दिया जाता है । कितनी शर्मनाक स्थिति है यह ।

यह तो कुछ भी नहीं है । लड़की विधवा होने के बाद उसके ऊपर मानो आसमान गिर गया हो । बहुत परिस्थितियों में घरवाले लड़कियों को विधवा होने के बाद उत्पीड़न किया जाता है ।

उनको सभी अधिकार से वंचित किया जाता है । पती की संपत्ती से हिस्सा मिलता नहीं । ऐसे बहुत मामले सामने न आने के कारण लड़कियां, महिलायें वृद्धाश्रम में देखने को मिलती है । उनका मुंडन किया जाता है । उन्हें अलंकार एवं सफेद वस्त्र परिधान करने के लिए मजबूर किया जाता है ।

आजकल लड़कियों को उनके द्वारा परिश्रम के लिये उचित वेतन नहीं मिलता है । गांव में एवं छोटे छोटे उद्योग में लड़कियों का शोषण किया जाता है ।

जब तक हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन नहीं किया जाएगा, तब तक स्कूलों में लड़कियों की संख्या नहीं बढ़ेगी । बहुत मामलों में पुलिस के पास मामला का दर्ज नहीं होता है । पुलिस एफ.आय.आर. लिखती नहीं । इसलिए पुलिस नियम कठोर होना आवश्यक है । लड़कियों को उनके द्वारा किये गये श्रम के लिये उचित न्यूनतम वेतन मिलना आवश्यक है । विधवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण दे कर स्वावलंबी बनाना आवश्यक है । लड़कियों को जिस दिन मुक्त रूप से अपनी मंतव्य देने एवं घूमने फिरने का अधिकार मिलेगा उसी दिन से वह सशक्त हो पायेगी ।

◆

कधी कधी वाटतं....

कधी कधी वाटतं,
हे विश्वचि घ्यावे आपुल्या कवेवर
या विश्वाचे प्रत्येक रहस्य जाणावे निरंतर!

कधी कधी वाटतं,
या पक्षांसवे नभी उंचउंच मनसोक्त उड़ावं,
या जगी माजलेल्या काहूराला पदोपदी तुड़वावं!

कधी कधी वाटतं,
सागराच्या लेकरासारखं अखंड़ जलामध्ये विहार करावं,
या जातीपातीच्या जरासंधाला एका दमात चित करावं!

कधी कधी वाटतं,
अग्नीच्या दिव्यज्योतीसारखी ही अवनी तेजोमय व्हावी,
मानवी दुःखाची समिधा तीत झोकून द्यावी!

कधी कधी वाटतं,
पावसाच्या सरीसारखं गोड़ गात फिरावं,
स्वतःसवे लोकांनाही प्रेमाच्या डोहात सामावून घ्यावं!

कधी कधी वाटतं,
निरंतर वाहणाऱ्या झऱ्यासारखं अखंड़ वाहत रहावं,
फोफावलेल्या दहशतवादाला सद्भावनेचं वेसण घालावं!

कधी कधी वाटतं,
ही हिरवीकंच वसुंधरा अन् हे निळेभोर नभ एकचि व्हावं,
मनुजाच्या रक्त रंगासारखं साऱ्यांनी एकाच झेंड़्याखाली यावं!

कधी कधी वाटतं,
कशाला करतोय मी मस्ती उठाठेव,
विश्वाचं कल्याण करण्यास समर्थ आहे ना माझा विठोबादेव!

कधी कधी वाटतं,
लाख इथे टिकले नाही तर मी कसा टिकणार,
या स्वार्थी जगाच्या कुरूक्षेत्रावर मी नक्कीच हरणार!

कधी कधी वाटतं,
स्वप्नं उरी बाळगतो मी अथांग पसरलेल्या सागरासारखी,
आकांक्षा माझी पूर्ण होईल का त्या चातकासारखी!

कधी कधी वाटतं,
पवित्र, निर्मळ गंगेत स्वतःला झोकून द्यावं,
मतलबी दुनियेचा वारा शिवण्याआधी त्या
सर्व कृपावंताशी एकरूप व्हावं!

– **निलेश श्रावणजी वारई**
बैंक ऑफ इंडिया

भारत में बाल-श्रमिक समस्या

श्री. वासुदेव रा. गवस,
कनिष्ठ अभियंता विद्युत, कोंकण रेलवे.

भारत में बच्चों को ईश्वर का रूप माना जाता है । अपने देश में सबसे जरूरी संपत्ती के रूप में बच्चों को संरक्षित किया जाता है । बचपन इंसान की जिंदगी का सबसे हसीन पल, न किसी बात की चिंता और न ही कोई जिम्मेदारी । बस हर समय अपनी मस्तीयों में खोए रहना । खेलना-कुदना और पढ़ना । लेकिन बाल मजदूरी हर दिन न जाने कितने अनमोल बच्चों का जीवन बिगाड़ रहा है । बालश्रम भार में बड़ा सामाजिक मुद्दा बनता जा रहा है ।

भारत एक विकसनशील राष्ट्र होते हुए कृषी प्रधान देश है । जिसमें करीबन 5.75 लाख गाँव है । उनमें भारत की आत्मा निवास करती है । विकसनशील भारत के सम्मुख कई बड़ी समस्याएँ खड़ी है । उनमें से सबसे बड़ी चुनौती है, बाल-श्रमिक समस्या ।

बाल-श्रम मानवाधिकार का खुला उल्लंघन है । यह बच्चों के मानसिक, शारिरीक, आत्मिक, बौध्दिक, एवं सामाजिक हितों को प्रभावित करता है । भारतीय संविधान में हमेशा से ही बालश्रम समाप्त करने तथा बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक उपाय किए जा रहे है । लेकिन से सब अपर्याप्त ही है । आज बाल-श्रम कानून को बने हुए कई साल हो जाने के बावजूद हमारे देश में सर्वाधिक बाल मजदूर है ।

बाल-श्रमिकों की बढ़ती संख्या का एक मूल कारण देश में व्याप्त गरीबी है । गरीबी के कारण बच्चों के माता-पिता सिर्फ इस वजह से उन्हें स्कूल नहीं भेजते की उनके स्कूल जाने से परिवार की आमदनी कम हो जाएगी ।

निर्धनता यही एक कारण इसके लिए जिम्मेदार नही है । अन्य कारण भी है जैसे की जनसंख्या विस्फोट, अशिक्षा, सस्ता श्रम, उदासिनता, तथा उनमें जागरूकता का अभाव, अल्पायु में विवाह, बालश्रम निवारण अधिनियमों का गंभीरता से अनुपालन न होना भी भार में बाल-मजदूरों की बढ़ी संख्या का कारण है ।

परिवारों में कलहपूर्ण वातावरण की विद्यमानता तथा अभावों की वजह से बालकों में असंतोष की भावना उत्पन्न हो जाती है । और वे अज्ञानता, भावुकतावश अपने अधिक सुखद भविष्य की तलाश में अपना घर छोड़ देते है । तत्पश्चात उन्हें जीवन की वास्तविकता का ज्ञान होता है । रोजी-रोटी की तलाश में संकटमय उद्योग और जोखिमयुक्त व्यवसायों में कार्य करने के लिए उन्हे बाध्य होना पड़ता है ।

इसके अलावा परंपरागत या वंशानुगत व्यवसायों में बाल्यावस्था में ही कार्य कर उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग देते है । भयंकर गरीबी और खराब स्कूली मौके की वजह से बहुत सारे विकासशील देशों में बाल मजदूरी बेहद आम बात है । बाल-श्रम की उच्च दर अभी भी 50 प्रतिशत से अधिक है । जिसमें 5 से 14 साल तक के बच्चे विकासशील देशों में काम कर रहे है । कृषी क्षेत्र में बालमजदूरी की दर सबसे उच्च है । जो जादा तर ग्रामीण और अनियमित शहरी अर्थव्यवस्था में दिखाई देती है । जहाँ के अधिकतर बच्चे अपने दोस्तों के साथ खेलते और स्कूल जाने के बजाए अपने माता-पिता के साथ कृषी कार्यों में कार्य करते है ।

बालश्रम का मतलब कार्य करनेवाला व्यक्ति कानुन द्वारा निर्धारित आयु सीमा से छोटा होता है । भारत में 14 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को रोजगार देना निषिध्द घोषित किया है । बच्चे माता-पिता के व्यापार में मदद, अपना छोटा सा व्यवसाय जैसे खाने-पिने की चीजे बेचना, पर्यटकों के गाईड के रूप में काम करना, होटल, दुकान में काम करना, सड़कों पर कई चीजे बेचना, जूते पॉलिश तथा साफ-सफाई करना ऐसे कार्य ये छोटे बच्चे करते है । यह अनुचित या शोषित माना जाता है ।

भारत के संविधान 1950 का अनुच्छेद 24 स्पष्ट करता है की 14 वर्ष से कम उम्र के किसी भी बच्चों को ऐसे कार्य देना अपराध है । बाल अधिनियम, बाल-श्रम निरोधक अधिनियम आदि भी बच्चों के अधिकार को सुरक्षा देते है । किन्तु इसके विपरित आज की स्थिती बिलकुल भिन्न है ।

पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार एवं राज्य सरकारों की पहल इस दिशा में सराहनीय है । उनके द्वारा बच्चों के लिए अनेक योजनाओं

का प्रारंभ किया गया है । जिसमें बच्चों के जिवन व शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव दिखे । शिक्षा का अधिकार इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है । और गुरूपाद स्वामी समिति की सिफारिशों के आधारपर उसके तहत कुछ बाल-श्रम के प्रति में सुधारने के लिए 1986 मे 'चाईल्ड लेबर एक्ट' बनाया था । खतरनाक व्यवसायों और प्रक्रियो में बच्चों के रोजगार पर प्रतिबंध लगाया है । विरोध एवं जागरूकता फैलाने के मकसद से हर साल 12 जून को 'बाल-श्रम निषेध दिवस' भी मनाया जाता है ।

आज सरकार ने आठवी तक की शिक्षा को अनिवार्य और निशुल्क कर दिया है । बालक जो देश का भविष्य है, आशा की किरण है । उसका बचपन छिनना मानवीय तथा नैतिकता के विरूध्द होगा । स्वस्थ बच्चे किसी भी देश के लिए उज्ज्वल भविष्य और शक्ति देते है ।

बाल मजदूरी को जड़ से खत्म करने के लिए जरूरी है, गरीबी को खत्म करना । सरकार द्वारा इस समस्या को सुलझाने के लिए सकारात्मक और सक्रिय कदम उठा रही है । ऐसे में राष्ट्र के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वो अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझे और बच्चों को जहा भी मजदूरी करते देखे, उन्हें शिक्षा की रोशनी में ले जाये और उनके अधिकार दिलवाने का प्रयास करे ।

महान अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता श्री अमर्त्य सेन ने कहा है की, जिस दिन हमारे देश के बच्चों को शिक्षा दी जायेगी और बालश्रम रूकेगा तभी हमारा भारत सकल घरेलू उत्पाद दर में प्रगती करेगा ।

◆

सवाल-जबाब

सवाल - सबसे बड़ा सुदृढ (मित्र) कौन?
जबाब - परमात्मा
सवाल - सबसे उच्च ज्ञान कौनसा?
जबाब - आत्मज्ञान
सवाल - सबसे भारी बल कौनसा?
जबाब - सत्य का बल
सवाल - सबसे बड़ा पुण्य कौनसा?
जबाब - परोपकार
सवाल - सबसे भारा पक्का संबंध किसका है ?
जबाब - आत्मा-परमात्मा का
सवाल - सबसे नि:स्वार्थ संबंध किसका है ?
जबाब - सद्गुरू - सत्शिष्यका
सवाल - श्रीकृष्ण के बासरीमें ऐसा कौनसा बीजमंत्र गुंजता था, के सुननेवाली प्यार से पागल होते थे ?
जबाब - ''क्लीं'' बीजमंत्र
सवाल - शक्ती और सामर्थ्य किससे आता है ?
जबाब - शांती और ध्यान से
सवाल - शक्ती का ऱ्हास किससे होता है ?
जबाब - संसारिक भोग और काम संम्बंधी विचारों से
सवाल - सबसे बडा तप कौनसा ?
जबाब - एकाग्रता
सवाल - सबसे उत्तम संगीत कौनसा है ?
जबाब - अजपा गायत्री
सवाल - सबसे बड़ा वैद्य कौन है ?
जबाब - फास्ट (उपवास)
सवाल - मानव कभी जागता है ?
जबाब - जब संसार के सुख-भोग-विलास सब तुच्छ होने लगते है, और भगवान से हित जुडती है तब मानव जागने लगता है ।

दिले तस्वीर है यार,
जबकी गर्दन झुका ली और मुलाकात कर ली ।

एस्. आर. लाखण
सीमा शुल्क, रत्नागिरी

एन.पी.ए.प्रबंधन आज की जरूरत

श्री. ईश्वर चन्द्र गुप्ता
बैंक ऑफ इंडिया, रत्नागिरी

बैंकिंग वह व्यवसाय है, जहां विभिन्न प्रकार के जन समूहों से धनराशि स्वीकार किए जाते हैं तथा उक्त धनराशि आवश्यकतानुसार ऋण वितरण हेतु प्रयोग में लाये जाते है । बहुत से प्रकरणों में प्रदान किए गए ऋण ब्याज सह वापस कर दिये जाते हैं, किन्तु कुछ मामलो में अनेक प्रकार के नियंत्रित अथवा अनियंत्रित कारकों के वजह से प्रदान किए गए ऋण का सम्पूर्ण अथवा कुछ भाग वापस नहीं हो पाते और वहीं से गैर निष्पादित आस्तियों अर्थात एन.पी.ए. का अस्तित्व प्रारम्भ हो जाता है ।

एन.पी.ए. बैंकिंग व्यवसाय का एक अभिन्न भाग है, जिसे नकारा नहीं जा सकता यद्यपि उचित तथा समय पर लिए गए विभिन्न उपायों द्वारा नियंत्रण में रखा जा सकता है । वर्तमान परिस्थितियों में जहां अधिकांश बैंकों में एन.पी.ए. तथा भारग्रस्त आस्तियों के प्रावधानों के कारण उनके तुलन पत्रों मे नुकसान प्रदर्शित हो रहे, वहीं अपनी संस्था भी इससे अछूती नहीं है । एन.पी.ए. प्रबंधन हेतु आवश्यक हो गया है, कि बैंक के प्रत्येक कर्मचारियों को अपना प्रयास दर्शना चाहिए ।

एन.पी.ए. के प्रबंधन हेतु एक जिम्मेदार अधिकारी के रूप में निम्नलिखित प्रकार से नियमों का तत्परता से सदैव पालन करना आवश्यक है ।

- एन.पी.ए. प्रबंधन ग्राहकों के चयन से ही प्रारम्भ होता है । कोई भी नया ऋण प्रस्ताव विचार करते समय ग्राहकों की गुणवत्ता, उनके द्वारा दर्शाये गए व्यवसाय/सेवा की बाजार में उनकी निरीक्षण कर वर्तमान तथा भविष्य की स्थिति का आंकलन करे । ऋण खाते धारकों की स्थितियाँ, बाजार मे हो रहे परिवर्तन की जानकारियाँ रखने पर संभावित एन.पी.ए. खातों की सूचना समय से पहले समझने पर, उचित समय पर प्रयास करने से भी एन.पी.ए. प्रबंधन में सहायता मिलती है ।
- ग्राहकों को ऋण संबन्धित सम्पूर्ण सूचना प्रदान करना; जैसे की ऋण का स्वरूप, ऋण किश्तों के भुगतान की अवधि, आवृत्ती, एन.पी.ए. होने की स्थिति में बैंक द्वारा उठाए गए सारे कदमों की जानकारी तथा समय पर ऋण अदा कर देने पर सम्माननिय ग्राहक होने के लाभों के बारें में अवगत कराना इत्यादि सम्मिलित होता है ।
- समय समय पर अतिदेय ऋण ग्राहकों को उनके ऋण योजनाओं के अनुसार स्मरण पत्र प्रेषित करना, ऋण ग्राहकों से निरंतर संपर्क बनाए रखना, उनके आवास अथवा व्यवसाय स्थलों पर दौरा करना इत्यादि प्रयास हो ।
- तकनिकी कारणों के वजह से कोई ऋण खाता एन.पी.ए. न हो इसका ध्यान रखना ।
- शाखा के सभी कर्मचारियों को एन.पी.ए. अथवा एन.पी.ए. के भावी सूची में आने वाले ऋण खाता धारकों का विभिन्न माध्यमों से नियमित रूप से संपर्क बनाए रखने हेतु सम्मिलित करना ।
- समय समय पर बुलाये गए शाखा कर्मचारियों की बैठक में एन.पी.ए. प्रबंधन हेतु अधिकाधिक प्रयास करने पर बल देना आवश्यक है ।

इन सबके पश्चात भी यदि कोई ऋण खाता एन.पी.ए. हो जाता है तो एन.पी.ए. में वसूली हेतु अपना प्रयास और भी सघन कर करना आवश्यक है । तथा बैंक के नियमानुसार वसूली हेतु आवश्यकतानुसार ऋण खातों की स्थिती के अनुसार सभी उपलब्ध साधनों जैसे चेतावनी पत्र देना, ऋण चूककर्ता के रूप में समाचार पत्रों में उनका छाया चित्र प्रकाशित करना, अदालतों में वसूली हेतु प्रकरण दाखिल करना, बैंक के अथवा लोक अदालतों के माध्यम से सुलह समझौतों द्वारा ऋण मामलों का निपटारा करना, सरफेसी विधि का प्रयोग जहां भी संभव है का यथोचित प्रयोग करता हूँ । किसी भी अवस्था में एन.पी.ए. ऋण ग्राहकों से वसूली हेतु अपना वार्तालाप में कमी आने नहीं देता हूँ । आवश्यकतानुसार वसूली घटकों का भी सहयोग लेता हूँ । अंत मे हमेशा यह प्रयत्न करता हूँ की कोई भी एन.पी.ए. ऋण खाता बिना किसी कार्रवाई के ना रह जाये एवं अंतिम वसूली तक अनवरत प्रयास जारी रहे ।

◆

कोंकण के उत्सव

– शिरिष शशिकांत उकिडवे
सेवानिवृत्त कर्मचारी, बैंक ऑफ इंडिया

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ
निर्विघ्नम् कुरुमेदेव सर्वकार्येशु सर्वदा
शुभ कार्येशु सर्वदा ।।

जैसे हर एक अच्छे काम की शुरूवात हम गणेश पूजा से करते है, उसी तरह कोंकण के प्रमुख त्यौहारों में गणेशोत्सव आता है । गणेशोत्सव और होली (शिमगा) ये कोंकण के प्रमुख त्यौहार है । गणेशोत्सव भाद्रपद महिने में आता है । अच्छी बारिशके बाद कोंकण का प्राकृतिक सौंदर्य खिल उठता है । सभी जगह हरियाली दिखती है । छोटे छोटे झरने, तालाब, नदियाँ, बारिश के पानीसे बहती रहती है । गणेशोत्सव के पहले वटपोर्णिमा और श्रावण महिने में नागपंचमी और गोकुलाष्टमी हो जाती है । नौकरी या धंधे की वजह से गाँव से दूर रहनेवाला कोंकण का हर एक आदमी गाँव आ जाता है । वो रेलगाड़ी या बस या प्रायव्हेट बस या कार से आते है । कोंकण में गणेश मूर्ति की हरएक गाँव में एक गणेश मूर्ती शाला होती है, उधर गणेश मूर्ती मिट्टी से बनाई जाती है । और वो पर्यावरण पूरक रहती है । गणेश चतुर्थीके पूर्व संध्या को गणेशजी का बहूतही धुमधाम से आगमन होता है । गणेशचतुर्थी के दिन फल, फुल और पुरोहित के मंत्रो से गणेशजी की स्थापना की जाती है । सुबह और शाम पूजा होती है । अलग अलग प्रसाद चढ़ावे जाते है । और पड़ोसी और रिश्तेदारों के साथ अर्चना की जाती है । इसी उत्सव में हरतालिका और ऋषी पंचमी शामिल होती है । गणपती को मोदक बहोत प्यारे है । उसकाभी नैवेद्य दिखाई जाता है । घर में एक उत्साही, आनंदी और धार्मिक वातावरण रहता है । फिर गौरीजी का आगमन होता है । उनकाभी भी नैवेद्य होता है । बाद में गौरी गणपती का विसर्जन होता है । उसके बाद आता है, नवरात्र देवी माँ का उत्सव । नौ दिनरात विविध कार्यक्रम से वो भी धुमधाम से मनाया जाता है । युवा वर्ग में उसका आकर्षण जादा रहता है । क्योंकि रात में देवी के मंड़प में पारंपारिक गरबा नृत्य होता है । जिसमें युवा बहोत मजा लेते है ।

इसके बाद दशहरा और दिवाली वो भी बड़ी धुमधाम से मनाये जाते है । महाशिवरात्री में भगवान श्री शंकरजी के मंदिर में भजन, पूजन, प्रसाद, नाटक ये कार्यक्रम होते है और वो भी अच्छी तरह से मनाए जाते है ।

'होली आई रे – आई रे होली आई रे'

कोंकण में होली एक दिन नही पंचमी से पौर्णिमा तक मनाई जाती है । सब लोग पारंपारिक वाद्य बजाते हुए पेड़ोंकी होली करते है । आपस में जो कटुता होती है, अच्छे बुरे बोलके निकाली जाती है । इसलिये मानते है की होली में दुष्टता, कटुता नष्ट होती है और

आपस में भाईचारा और शुद्ध मैत्री बढ़ती है । होली के दिन पुरोहित मुहूरत निकाल के गाँव के प्रमुख व्यक्तीयों के उपस्थिती मे सुरमाड़ नाम का बड़ा पेड़ तोड़ा जाता है । सब लोग उसे उठाके खेलते खेलते देवी के प्रमुख स्थानपर लाते है । उसके उपर देवींका निशान लगाकर सामने खड़ा किया जाता है । ग्राम देवी की पालखी उसके सामने बैठी रहती है । चावल की घाँस, बांबू और पोफळी के छोटे छोटे पेड़ोंसे होली रचाई जाती है । देविका प्रमुख पुजारी गुरव अग्नि से होली प्रज्वलित करता है । देवी की पालखी परिक्रमा निकाली जाती है । होली में नारियल अर्पण करते है और लोग देवी को मन्नते माँगते है । और जिसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है वो प्रसाद चढ़ाने के लिए आते है । देवी गाँव के हर एक गाँव में जा के उधर उसकी पूजा होने के बाद आशीर्वाद देती है । यह एक अनोखा प्रकार है । पूरा गाँव होने के बाद देवी मंदीर में आती है और होली का उत्सव खत्म होता है ।

◆

हिंदी कविताएँ

विमर्श है नारी...

हम देना जानती है सर्वस्व
तन-मन-धन से
समर्पित तुम्हारे लिए ।
हमारी हर चीज
तुम्हे ही अर्पित
हमारे गले में मंगलसूत्र
तुम्हारे नाम का ।
हम जानती है बच्चों को
नाम सिर्फ तुम्हारा ।
हमारा शरीर, मन के विचार
सिर्फ तुम्हारे लिए ।
जीवन अमूल्य, फिर भी
समर्पण ही हमारे संस्कार ।
तुम्हारा सुख-दुःख हमारा
तुम्हारी यश, प्रतिष्ठा हमारी ।
फिर भी हम तुममें नहीं
तुम हो जाते हो पराये ।
क्यों...
हम केवल विमर्श है....
हम गुहित है तुम्हारे लिए...

सीता और द्रौपदी

सीता चीख उठी
जमीन में धँसने से पहले
द्रौपदी रो उठी
पांड्वों में बँटने से पहले
नहीं झेल सकती
बारम्बार
अपमान के घूँट
चरित्र का हनन
अग्निपरीक्षा की आग
चुप रहने के नियम
मर्यादाओं में बंधा
नारी धर्म,
अब बदलना पड़ेगा
पुरुषप्रधान समाज
सिध्द करना होगा
बराबरी का हक
सीता और द्रौपदी का
नया रूप
अवतरित होगा और
मिलेगा उःशाप ।

– प्रा. डॉ. चित्रा गोस्वामी
रत्नागिरी

देखो पंछी चहचहा रहे है

देखो पंछी चहचहा रहे है,
मानो कुछ तो बता रहे है ।
अपनी धुन में गाते रहते,
जहाँ दिल चाहे जाते रहते ।
जिंदगी का सबको सिखला रहे है,
देखो पंछी चहचहा रहे है ।
जिंदगी का मजा लेते रहा,
अपने सलिके से जीते रहो ।
ना जाने कब जिंदगी पराई हो जाएगी,
मौत ये अपनी सगी हो जाएगी ।
कुछ तो कर लो इमान से,
जी लो इसे शान से ।
यही फलसफा हमें सिखला रहे है,
देखो पंछी चहचहा रहे है ।
दूर आसमानों में उड़ते रहते,
ऊँची उड़ान भरते रहते,
कोई फिक्र न परवाह करते हुए,
मुश्किलों से लड़ते हुए,
हवा का रुख आजमाते रहते ।
देखो पंछी चहचहा रहे है ।
मानो हमें जिंदगी जीना सिखला रहे है
इंसान भी इनसे कुछ सीख ले,
बुनकर जिंदगी का ताना-बाना,
हौसलों के पंख बनाना,
भरे उड़ान आसमान में
यही हुनर वो दिखला रहे है,
देखो पंछी चहचहा रहे है ।
मानों कठिनाइयों से ऊपर वो निकल गया,
जानो परेशानियों से जुझ कर वो संभल गया,
यही तो पंछी चहचहा रहे है,
जिंदगी जीने का दृष्टिकोन बता रहे है ।
देखो पंछी चहचहा रहे है,
देखो पंछी चहचहा रहे है ।

– मनिष अ. पड़िया
बैंक ऑफ इंडिया, कारवांची शाखा

शहीद हुए जवानों के ऊपर

ओढ़ के तिरंगा क्यूँ पापा आये हैं,
माँ मेरा मन बात ये समझ ना पाये है ।
ओढ़ के तिरंगे को क्यूँ पापा आए हैं ।।

पहले पापा मुन्ना-मुन्ना कहते आते थे,
टाफियाँ, खिलौने साथ में भी लाते थे ।
गोदी में उठा के खूब खिलखिलाते थे,
हाथ फेर सर पे प्यार भी जताते थे ।।

पर ना जाने आज क्यूँ वो चुप हो गए,
लगता है कि खूब गहरी नींद सो गए ।
नींद से पापा उठो मुन्ना बुलाये हैं,
ओढ़ के तिरंगे को क्यूँ पापा आये हैं ।

फौजी अंकलो की भीड़ घर क्यूँ आई है,
पापा का सामान साथ में क्यूँ लाये हैं ।
साथ में क्यूँ लाये है वो मेड़लो के हार,
आँख में आँसू क्यूँ सबके आते बार-बार ।।

चाचा, मामा, दादा-दादी चीखते हैं क्यूँ,
गाँव क्यूँ शहीद पापा को बताये हैं ।
माँ मेरी बता वो सर को पीटते हैं क्यूँ,
ओढ़ के तिरंगे को क्यूँ पापा आए हैं ।।

माँ तू क्यूँ है इतना रोती ये बता मुझे,
होश क्यूँ हर पल है खोती ये बता मुझे ।
माथे का सिन्दूर क्यूँ है दादी पोछती,
लाल चूड़ी हाथ में क्यूँ चुआ तोड़ती ।।

काले मोतियों की माला क्यूँ उतारी है,
क्या तुझे माँ हो गया समझना भारी है ।
माँ तेरा ये रूप मुझे ना सुहाये हैं,
ओढ़ के तिरंगे को क्यूँ पापा आये हैं ।।

पापा कहाँ जा रहे अब ये बताओ माँ,
चुपचाप से आँसू बहा के यूँ सताओ ना ।
क्यूँ उनको सब उठा रहे हाथों को बाँधकर,
जय हिन्द बोलते हैं क्यूँ कंधो पर लादकर ।।

दादी खड़ी हैं क्यूँ भला आंचल भींचकर,
आँसू क्यूँ बह रहे हैं आँख मींचकर ।
पापा की राह में क्यूँ फूल सजाये हैं,
ओढ़ के तिरंगे को क्यूँ पापा आए हैं ।।

क्यूँ लड़कियों के बीच में पापा लिटाये हैं,
पापा, ये दादा कह रहे तुमको जलाऊँ, मैं ।
इस आग में समा के साथ छोड़ जाओगे,

आँखो में आँसू होंगे बहुत याद आओगे ।
अब आया समझ माँ ने क्यूँ आँसू बहाये थे,
ओढ़ के तिरंगा पापा घर क्यूँ पापा आए थे ।।

तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी.

आज भी याद है...

सुनसान खेत की झडी हुई निमको लटका हुआ
बापू आज भी याद है ।

याद है सबकुछ आज भी
माँ, का फूट-फूट रोना, बहन की सिमटी बाँहे
और दादी की बंद जुबान ।

आज भी वो दर्द-भरा शोर कानों में
आतंक मचाता है ।
पुलीस के पंचनामे का वो कागज आज भी
आँखो में चुभता है ।

माँ की फूटी चूडीयो ने किया जो गहरा जख्म
आज भी ताजा है ।
मातम के दौर में गुनेहगार के पिंजडे में
कानून ने ही किया जुल्म दिल दहलाता है ।

मय्यत के बाद नहाने की वो बाल्टी
आज भी दिखाई देती है आँगन में ।
आज भी याद है वो पानी लाता रहीमचाचा
उसी नीम को लटका हुआ ।

दरवाजे से ही वापस लौटी बहन की बारात
आज भी मजाक बनी बैठी है गाँव में ।

आज भी वही तिमीर है, वही है हाहाकार
वही है सावकार और वही है सरकार

– **सुरज महादेव माने**
बैंक ऑफ इंडीया

बारिश

बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है
प्यासी धरती की प्यास बुझाती है
धुलों का उड़ना बंद कर जाती है
मिट्टी की भीनी सुगंध फैलाती है
बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है ।

भीषण गर्मी से बचाती है
शीतलता हमें दे जाती है
धुँवाधार प्रहारों से पतझड़ को भगाती है
बहारों का मौसम लाती है ।
बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है ।

चारों ओर हरियाली फैलाती है
नदियों का पानी बढाती है
तालाबों को भर जाती है
बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है ।

बारिश के चलते ही खेती हो पाती है
किसानों के होठों पे मुस्कान ये लाती है
रिमझिम फुहारों से सुधा मिटाती है
बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है ।

मोरों को नचाती है
पहाड़ों में फूल खिलाती है
बीजों से नए पौधे उगाती है
बारिश जब आती है, ढेरों खुशियाँ लाती है ।

– **जी. राजकुमार**
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी,
सहायक परिवहन प्रबंधक संरक्षा.

ऐसी हमारी कोंकण रेल

झुक झुक झुक झुक कोंकण रेल ।
मन को भाती, सबको ले जाती ।।
कहीं पहाड़ों से तो कहीं सुरंगो से इसका मेल ।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

खिलते रहना, निरंतर चलना।।
बोझ उठाना, मंजिल तक पहुंचाना।।
मनपसंद स्वाद सब को खिलाना।
न थकते कम करना ये सब सिखलाती, है ये रेल।।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

हापुस की खुशबू को लेकर आती है वो मुंबई।
पर मछली की महक भी न भूल पाता हर कोई।।
मनोरंजन एवं सुखकारक को प्यार भरा ये मेल ।
दिलोंको जोड़ना, यादों को ताजगी देना, है इसका खेल ।।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

सपना साकार करके दिखाया जो अंग्रेजो ने देखा था ।
गर्व करो पुरा किया मर मिटनेवाले साथियों का ।।
तब कई खुशियों की सुनहरी किरण लाई वाजपेयी अटलजी ने ।।
हुई समर्पित कोंकण रेल, भारतीय देशवासियों की सेवा मे ।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

चलो सभी साथ मिलकर प्रतिज्ञा हम सब करते हैं ।
पुरे होश हवास मे मिलजुलकर काम रेल का करते है ।।
दुनिया में वो रहे सबसे आगे, ऐसे हमारे कदम पड़े ।
यह सुहाना सपना सच करने, डटकर सदा रहेंगे खड़े ।।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

भक्तों की बढ़ती है भीड़ जब धूमधाम से बाप्पा आते है ।
रंगोसे वो खिल-खिल उठती, होली खुब जब खेलते है ।।
ऐसे सुहाने सफर को हम कभी न भूल पाएंगे ।
बार बार खुशियों के गीत, झुम झुम कर दोहरायेंगे ।।
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, ऐसी हमारी कोंकण रेल

श्याम तोड़कर
वरिष्ठ क्षेत्रिय सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता,
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

तलाश

जलाकर मुझे रोशन कर दे जहाँ सारा,
उस रोशनी की तलाश है ।

रंग रूप से भी हो रूह जिसकी सुंदर,
उस हसीन ख्वाब की तलाश है ।

बाँट सकूं गम और खुशियाँ मैं और तुम,
उस इंसानी भाईचारे की तलाश है ।

गुणगुनाता हूँ वक्त बेवक्त मैं और तुम,
उस हसीन गझल की तलाश है ।

सागर से भी हो गहरा और आसमाँ से ऊँचा,
उस इंसानियत की तलाश है ।

देख सकूँ सभी मजहबों का अक्स एकसाथ,
उस आईने की तलाश है ।

आजाद उड़ूँ मैं ना हो सरहदों का बंधन,
उस अजूबे मूल्क की तलाश है ।

- निलेश श्रावणजी बारई
बैंक ऑफ इंडिया

साधना

हरी की लीला बडी अपार ।
बन गये आप अकेले सब कुछ
नाम धरा संसार ।।
माता पिता गुरु स्वामी बनकर
करें डाँट फटकार ।
सुत दारा अरू सेवक बनकर
खुब करें सतकार ।।
कभी रोग का रूप बनाकर
बनते आप बुखार ।
कभी वैद्य बन दवा खिलाते
आप करें उपचार ।।
कभी भोग सुख मान बढाई,
हाजीर में नर-नारी ।
कभी दुःखों का पहाड पटकतो
मचती हाहाकार ।।
कभी संत बनकर जीवों पर,
कृपा दृष्टी विस्तार ।
अनगिनत जनमों का दुःख संकट,
छन महँ देवें टार ।।
कभी धरनी पर संतत के हित,
धर मानुष अवतार ।
अजब अनोखी लीला करते,
सुमिरत हो भवपार ।।
अनगिनत स्वाँग रचाते हरदम,
धन्य बडे सरकार ।
ऐसे परम कृपालू प्रभू को,
बिनवऊँ बारंबार ।।

–एस्. आर्. लाखण
सीमा शुल्क, रत्नागिरी

जीवन रेखा

पंछी उड गया खाली रह गया,
पिंजरा तुम्हारे सीने का ।
ये भूमिपर रहने वालों,
तुम्हें सहारा माटी का ।
सद्विचार लेकर मन में,
मांग लेकर ज्ञान का ।
सद्भाव अंगीकार कर,
दौड विचार मत-भेद का ।
हम सारे भाई भाई,
देश हमारा भाग्य का ।
सब मिलकर काम करेंगे,
उध्दार करेंगे देश का ।

एस्. एस्. जाधव
सीमा शुल्क, रत्नागिरी

वीर-जवान

वीर सैनिको आगे बढकर,
शत्रु को तुम लगाम देकर,
बाजी प्रभू जैसा होकर,
भगा दिया शत्रु को ।
सिंह जैसा बनकर तुम,
जीत लिया कारगिल,
सीने में गोली खाकर,
बचा लिया मातृभूमि को ।
सैनिक हमारे आगे बढकर,
प्राण ज्योती हाथ में लेकर,
शिवराय जैसा शूर होकर,
बचा लिया हिन्दुस्थान को ।

– एस्. एस्. जाधव
सीमा शुल्क, रत्नागिरी

प्रार्थना

देश के वास्ते झगड के हम,
घुसखोरों को सीमा पार करेंगे,
जिते या मरे यही प्रेरणा
मनमें अपने ले लिया ।
खूनकी बहाकर गंगा,
टायगर हिल चित लिया ।
जान खतरे में डालकर तुम,
अपने देश को बचा लिया ।
दुश्मनों को भगाकर,
प्रेरणा मिले जवानों को ।
भगवान को करे प्रार्थना,
शक्ती मिलें जवानों को ।
देश के नवजवान सारे,
चलो काम करेंगे देश के,
यही प्रेरणा मन में रखकर,
अपने देश का रक्षण करें ।

– एस्. एस्. जाधव
सीमा शुल्क, रत्नागिरी.

मराठी कविताएँ

अजूनही!

ओसाड माळरानावर वठून गेलेल्या लिंबाला
लटकलेला बाप अजूनही आठवतोय.

आठवतेय सारे काही लख्ख
आईने फोडलेला हंबरडा, बहिणीचा थरकाप
आणि आजीची बसलेली वाचा.

लुप्त झालेल्या हुंदक्यांचा आवाज अजुनही
कानांवर कर्कश घोंघावतोय.
पोलिसांच्या पंचनाम्याची प्रत स्पष्ट दिसते
कधी-कधी चौकीसमोरून जाताना.

सुतकात असताना आरोपीच्या पिंजऱ्यात कायद्यानेच
केलेली होरपळ अजुनही काळजाचं पाणी-पाणी करतेय.

आईने फोडलेल्या बांगड्यांची तीक्ष्ण जखम अजुनही
खोलवर सलतेय.
बोडकं तिचं कपाळ दैवानं केलेला घाव अजुनही
टोकरतंय

धन देऊन झाल्यावर अंघोळीची अर्ध्या तांब्याने
भरलेली बादली आजही दिसतेय.
चार कोसांवरून तो अर्ध्या तांब्या पाणी आणलेला
सदाआप्पा त्याच झाडाला लटकलेला अजूनही आठवतोय.

अजुनही तोच तिमीर आहे तोच आहे थरार
तोच आहे सावकार आणि तेच आहे सरकार!

– सुरज महादेव माने
बँक ऑफ इंडीया

अधूरे विश्व माझे

अधूरे रंग, अधूरे गंध
अधूरे स्वप्न नयनावरी,
अधूरे शब्द, अधूरे गीत
अधूरे सूर ओठांवरी !
अधूरे प्रेम, अधूरी माया
अधूरी प्रीती काळजात,
अधूरी मैत्री, अधूरी नाती
अधूरी भक्ती कुराण !

अधूरे डाव, अधूरे खेळ
अधूरे विजय जीवनी,
अधूरे भाग्य, अधूरी संधी
अधूरे अश्रू नयनी !

अधूरी छाया, अधूरी माया
अधूरे जगणे माझे,
अधूरी अनल, अधूरे मरण
अधूरे प्रेत माझे !

अधूरा मी, अधूरी तृष्णा
अधूरे विश्व माझे.
अधूरा प्राण, अधूरे जीवन
अधूरे विश्व माझे.....!

– निलेश श्रावणजी बारई
बँक ऑफ इंडिया

स्मशान

आकाशी होई, देहाचा धूर
धरतीच्या हृदयास, राखेचा भस्म ॥

तुझा तो पिसारा, काळोख सारा
देहाच्या ज्वाला, आभास सारा ॥

मनाचा अंत येथेच होई
विचारांची मशाल, येथेच विझे ॥

उगीच हे सारे, व्यर्थ ते स्वार्थ
इच्छांचा मनोरा, विखरला सर्व ॥

स्वप्नांचे शिखर, बर्फाचा थर
वितळल्या आशेत, अग्निचा कल्लोळ ॥

– तुषार भास्कर माणिकराव
बँक ऑफ इंडिया

राजभाषा

रत्नसिंधु

हिंदी दिवस तथा
हिंदी पखवाडा
14 सितंबर से
30 सितंबर 2016

सदस्य कार्यालयों ने मनाया हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाडा

इलाहाबाद बैंक

आयकर कार्यालय

न्यू इंडिया एश्योरेन्स

कोकण रेलवे

सीमा शुल्क

सीमा शुल्क

कोर कमिटी सदस्य जर्नादन शिंदे कोंकण रेलवे के सेवा निवृत्ती पर समितीद्वारा सत्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी
हिंदी पखवाडा दि. 14 सितंबर 2016 से 30 सितंबर 2016

नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2015-16	
पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	कोंकण रेलवे
द्वितीय	आकाशवाणी
तृतीय	सीमा शुल्क कार्यालय
प्रोत्साहन	इंडियन ओवरसीज बैंक

प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता आयोजक – बैंक ऑफ इंडिया 20/09/2016	
प्रथम	श्री. मुकेश कुशवाहा, सीमा शुल्क कार्यालय
द्वितीय	श्री. एन.आर. भोईनकर, समुद्री उत्पाद निर्यात
तृतीय	श्री. अंकित सिंह, सीमा शुल्क कार्यालय
प्रोत्साहन	श्री. कृष्णाकांत सिंह, सीमा शुल्क कार्यालय श्री. जितेंद्र कुमार मीना, आकाशवाणी

राजभाषा प्रश्नमंजूषा प्रतियोगिता 21/09/2016 आयोजन – दि न्यू इंडिया एश्योरेंन्स कं,रत्नागिरी.	
प्रथम	श्री. मनोज वर्मा, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
द्वितीय	श्री. नितीन पाटील, इलाहाबाद बैंक श्री. मुकेश कुशवाहा, सीमा शुल्क कार्यालय
तृतीय	श्री. एन.आर. भोईनकर, समुद्री उत्पाद निर्यात श्री. शरद अग्रहरी, आकाशवाणी

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता 23/09/2016 आयोजक – सीमा शुल्क मंडल कार्यालय, रत्नागिरी.	
प्रथम	श्री. मनोज वर्मा, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
द्वितीय	श्री. शरद अग्रहरी, आकाशवाणी
तृतीय	श्री. जितेंद्र कुमार मीना, आकाशवाणी
प्रोत्साहन	श्री. निमिष म्हाडेश्वर, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स श्री.तन्मय शर्मा, सीमा शुल्क कार्यालय

हिंदी काव्य पठण प्रतियोगिता 27/09/2016 आयोजक – आकाशवाणी, रत्नागिरी.	
प्रथम	श्री. सुरज माने, बैंक ऑफ इंडिया
द्वितीय	श्री. मनीष पडिया, बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	श्रीमती अंजली पवार, कोंकण रेलवे
प्रोत्साहन	श्री. अवधुत बाम, आकाशवाणी श्री. मुकेश कुशवाहा, सीमा शुल्क कार्यालय

आशुभाषण प्रतियोगिता 28/09/2016 आयोजक – कोंकण रेलवे, रत्नागिरी.	
प्रथम	श्री. शरद अग्रहरी, आकाशवाणी
द्वितीय	श्री. सुरज माने, बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	श्री. अब्दुल अजीज नाकाडे
प्रोत्साहन	श्री. तुषार माणिकराज, बैंक ऑफ इंडिया श्री. किरण खटावकर, दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कं. श्री. अनिल कोतवाल, विजया बैंक

राजभाषा में कामकाज के पांच सूत्र

एक

तय कीजिए कि
आपको हिन्दी में
अपना काम करना है

दो

हिन्दी का इस्तेमाल
शुरु कर दीजिए अपने
छोटे–छोटे कामों से

तीन

घबराइए मत हिन्दी
की अपनी छोटी–छोटी
गलतियों से

चार

अटकिए मत शब्दों के लिए
शुरु में अंग्रेजी शब्द
देवनागरी में
ही लिख दीजिए

पांच

अभ्यास बढाते रहिए
जब तक कि आप में
आत्मविश्वास न आ जाए

एक दिन
आप स्वयं पाएंगे कि
आप अपना कार्य हिन्दी में अधिक
अच्छी तरह करने लगे है।

सभी को दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ

नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.